प्रसार बुलेटिन

कृषकों की आर्थिक समृद्धि एवं अधिक उत्पादन के लिये उन्नत फसल प्रणालियां

डा. एम.पी. सिंह

डा. बी. गंगवार

कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना निदेशालय

मोदीपुरम, मेरठ–250110, उ0 प्र0

प्रसार बुलेटिन

कृषकों की आर्थिक समृद्धि एवं अधिक उत्पादन के लिये उन्नत फसल प्रणालियां

डा. एम.पी. सिंह
डा. बी. गंगवार

कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना निदेशालय
मोदीपुरम, मेरठ–250110, उ0 प्र0

प्रकाशकः परियोजना निदेशक
कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना निदेशालय
मोदीपुरम, मेरठ – 250 110, उ.प्र.

प्रकाशन वर्ष : 2011

मुद्रक :–

युगान्तर प्रकाशन (प्रा.) लि., डब्ल्यू एच–23ए मायापुरी, नई दिल्ली–110064
दूरभाष – 011–28115949, 28116018

दो शब्द

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि एवं अन्य कृषि श्रोतों का सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) वर्ष 2009–10 में 15.7 प्रतिशत एवं 52.1 प्रतिशत रोजगार कार्यक्षमता की भागेदारी रही है। बदलते परिवेक्ष में राष्ट्रीय स्तर पर कृषि योग्य भूमि की औसतन जोत का आकार निरन्तर घटता जा रहा है जोकि वर्ष 1970–71 में 2.30 हैक्टेअर से घटकर वर्ष 2009–2010 में 1.11 हैक्टेअर रह गया है, इसका मुख्य कारण जनसंख्या बढोतरी ही है जिसमें कि 70 प्रतिशत सीमांत एव् 16 प्रतिशत लघु कृषकों की सख्या है जिनकी जोत का आकार 1 हैक्टेअर या इससे कम है। देश की भूमि की सामान्यतः औसत फसल सघनता 25 प्रतिशत से बढकर 136 प्रतिशत तक दर्ज हुई, साथ ही साथ उत्पादन में वृद्धि भी दर्ज हुई परन्तु जनसंख्या की बढोत्तरी एवं खाद्यान्न की माँग के अनुपात में उत्पादन कम है, जो एक चिंन्ता का विषय है। यूं तो वर्ष 2010–11 में 241 मिलियन टन खाद्यान्न का रिकार्ड उत्पादन हुआ फिर भी सतत् शोध आवश्यक हैं क्योंकि वर्ष 2030 तक 345 मिलियन टन खाद्यान्न की आवश्यकता होगी। देश की बढती जनसंख्या के लिए अधिक खाद्यान्न की आवश्यकता को वर्षो पहले भारत सरकार एवं देश को कृषि क्षेत्र में गौरवान्ति करने वाले प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों ने महसूस कर लिया था। जिसके परिणाम स्वरूप सन् 1989 में फसल प्रणाली अनुसंधान परियोजना निदेशालय की स्थापना हुई। निदेशालय के अन्तर्गत अनेको प्रयोग किये गये और विभिन्न केन्द्रों के माध्यम से किसानों के साथ उन्ही के खेतों पर अनुसंधान कार्य भी किये गये जिनके परिणाम आज देखने को मिल रहे हैं। तथापि नई– नई समस्यायें एवं शोघ योग्य अनेकों पहेलु हैं जिन पर सतत् अनुसंधान की आवश्यकता है। इसी कडी में वर्ष 2010 में फसल प्रणाली पर आधारित अनुसंधान की दिशा कृषि प्रणाली की ओर केन्द्रित की गयी और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा फसल प्रणाली अनुसंधान परियोजना निदेशालय का नाम बदलकर कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना निदेशालय, मोदीपुरम कर दिया गया। पिछले दो दर्शकों में कुछ ऐसे अनुंसधान एवं फसल प्रणालियां जो वर्षो परखे गये, उनका प्रर्दशन भी अनुसंधान प्रेक्षत्रों पर प्रतिवर्ष किया जाता रहा है तथापि लिखित रूप में फसल प्रणाली के बारे में समाग्री उपलब्ध नहीं थी। इसी को ध्यान में रखकर फसल प्रणाली तकनीकों का संकलन इस बुलेटिन किया गया है। आशा है यह सकंलन किसानों एव प्रसार कर्ताओं को महत्वपूर्ण दिशा निर्देशिका सिद्ध होगा और इसका उपयोग कर वह अधिक उत्पादन प्राप्त करने में अग्रसर होगें। साथ ही साथ अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ कर सकेगें। इस कडी में जुड़ें हुऐ सभी वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों एव् अन्य स्टाफ भी आभार के पात्र है क्योंकि उनकी मेहनत अब फल देने के स्तर पर पहुँच गयी है। तथापि प्रकाशन में सुधार हेतु सुझाव एवं समालोचना भी आमंत्रित की जाती है, जिससे कि आने वाले प्रकाशनों में बेहतर सामग्री उपलब्ध करवाकर इस क्षेत्र के विकास में सहभगी हो सके।

परियोजना निदेशक

विषय सूची

कमांक	फसल प्रणालियां	पृष्ठ संख्या
1	धान–आलू–मूँग	1
2	धान–सरसों–मूँग	2
3	धान–फूलगोभी–मूँग	3
4	धान–फूलगोभी–लोकी	4
5	धान–मटर (उच्चीकृत क्यारी विधि)–भिन्डी (उच्चीकृत क्यारी विधि)	5
6	धान–गेहूँ (शून्य कर्षण)–मूँग	6
7	धान–गेहूँ (शून्य कर्षण)–ढैंचा	7
8	धान–गेहूँ (प्रक्षेत्र विशेष पोषण प्रवन्धन)	8
9	मक्का–आलू–मूँग	9
10	मक्का–तोरिया–गेहूँ	10
11	मक्का–सरसों–मूँग	11
12	मक्का+अरहर (उच्चीकृत क्यारी विधि)–गेहूँ	12
13	मक्का–आलू–भिन्डी	13
14	मक्का–आलू–प्याज	14
15	मक्का–तोरिया–खरबूजा	15
16	मक्का–आलू–प्याज–ढैंचा	16
17	धान–लहसुन–ढैंचा	17
18	मक्का–सरसों–गन्ना	18
19	गन्ने की पेड़ी–गेहूँ	19
20	मक्का–आलू–गन्ना	20
21	धान–चना–ढैंचा	21
22	मक्का–चना–ढैंचा	22
23	अरहर–गैहूँ–ढैंचा	23
24	ज्वार (हरा चारा)–उर्द–गेहूँ	24
25	मक्का–लहसुन–ढैंचा	25

धान–आलू–मूँग

जून के दूसरे सप्ताह से अक्टूबर का प्रथम सप्ताह
धान

उन्नत प्रजातियाँ :– साकेत–1, साकेत–4, नरेन्द्र–1, पी.आर.एच.–10 एव् हाईब्रिड–986

रोपाई :– नर्सरी डालने के 22–25 दिन बाद 2–3 पौधे/हिल

लाईन से लाईन की दूरी :– 20 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 10 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– नाईटोजन–100, फास्फोरस–60 एवं पोटाश–40 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियत्रंण

(i) रोपाई के 48 घंटे के अन्दर ब्यूटाक्लोर 1.5 लीटर को 800 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव या बालू में मिला कर प्रयोग करें या आलमिक्स 20 कि.ग्रा./हे0 फसल में डालें।

कीट नियंत्रण :– फुदके, मिलीवग, गन्दी कीट एवं सूडी की रोकथाम के लिये मैलाथियान 50 प्रतिशत 1.5 ली0/हे0 800 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करें।

बीमारियाँ

1. थाईरम, कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से 2.5 ग्राम/कि.ग्रा. बीज को उपचारित करके बोये।

2. **खैरा रोग:–** जिंक सल्फेट 5 कि.ग्रा. को 20 किलो यूरिया तथा 2.5 कि.ग्रा. बुझा हुआ चुने को 500 ली0 पानी में मिलाकर प्रति हे0 की दर से रोपाई के 15–20 दिन के अन्दर छिडकाव करें।

औसतन खर्च –रु. 24000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु.15000– 37500/हे0

अक्टूबर के दूसरे सप्ताह से फरवरी का अन्तिम सप्ताह
आलू

उन्नत प्रजातियॉ :– कु0 बहार, कु0 सदाबहार, कु0 चिपसोना–1, कु0 बादशाह, कु0 चन्द्रमुखी एव् कु0 चिपसोना–2

बीज की मात्रा :– 20–25 कु0

लाईन से लाईन की दूरी :– 50–60 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 20–25 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 20–25 टन गोबर की खाद, नाईटोजन–180, फास्फोरस–120 एव् पोटाश–150 कि.ग्रा./हे0

पौधों पर मिट्टी चढाना :– जब पौधे 15–20 सें.मी. के हो जाये।

कीट नियत्रण :– कार्बोफयूरान 3 जी की 30 कि.ग्रा./हे0 बुआई के समय डालें।

बीमारियाँ :–

1. पछेती एव् अगेती झुलसा :–

(i) रोग प्रतिरोधक प्रजातियॉ उगाये।

(ii) मेटालेक्सिल युक्त रसायन 2 कि.ग्रा./हे0 की दर से छिडकाव करें।

2. मोजेक– रोगोर– 30 ई0सी0 की 600–700 मी0 ली0 मात्रा 500–600 ली0 पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से छिडकाव करें।

औसतन खर्च –रु. 52000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु 40000–75000/हे0

मार्च के प्रथम सप्ताह से जून का दूसरा सप्ताह
मूँग

उन्नत प्रजाति :– एस.एम.एल.–668, एस.एम.एल.–832, टाइप–44, पन्त मूँग–2, पी.एस.–16 एव् पूसा बिसाल

बीज की मात्रा :– 20 कि.ग्रा./हे0

लाईन से लाईन से दूरी :– 45 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 10–15 टन गोबर की खाद, नाईटोजन–20–40 एव् फास्फोरस–40–60 कि.ग्रा./हे0

सिचाई :– 3 से 4

खरपतवार नियत्रण :–

1. प्रथम निराई 20–25 दिन
2. दूसरी निराई–40–45 दिन

बीमारियाँ :–

1. पीला मोजेक :– मैटासिस्टोक्स (0.1%), मैलाथिओन (0.1%) का छिडकाव करे।

2. लीफ कर्ल :– मैटासिस्टोक्स (0.1 प्रतिशत) का छिडकाव करना चाहिए।

कीट नियत्रण :–

1. हैयरी कैटरपीलर :– एन्डोसल्फान 30 ई.सी. 1.5 ली0 का 1000 ली0 पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

2. लीफ होपर :– मोनाक्रोटोफोस 40 ई.सी./एन्डोसल्फान 30 ई.सी. 1.5 ली0 का छिड़काव करें।

औसतन खर्च–रु.14500/हे0 **शुद्व लाभ** – रु 23500–39000/हे0

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोये।
3. उन्नत किस्म का बीज बोये।
4. अन्य वैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण एव् कीट प्रवन्ध अपनायें
6. समय पर फसल की कटाई करें तथा समय से मूँग के फसल अवशेष को भूमि में मिलायें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 215 से 415 रुपये प्रति दिन/हे0

धान–सरसों–मूँग

जून के दूसरे सप्ताह से अक्टूबर का प्रथम सप्ताह
धान

उन्नत प्रजातियाँ :– साकेत–1, साकेत–4, नेरेन्द्र–1, पी.आर.एच.–10 एव् हाईब्रिड–986
रोपाई :– नर्सरी डालने के 22–25 दिन बाद 2–3 पौधे/हिल
लाईन से लाईन की दूरी :– 20 सें.मी.
पौधे से पौधे की दूरी :– 10 सें.मी.
खाद एवं उर्वरक :– नाईटोजन–100, फास्फोरस–60 एव् पोटाश–40 कि.ग्रा./हे0
खरपतवार नियत्रंण :–
(i) रोपाई के 48 घंटे के अन्दर ब्यूटाक्लोर 1.5 लीटर को 800 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव या बालू में मिला कर प्रयोग करें या आलमिक्स 20 कि.ग्रा./हे0 फसल में डालें।
कीट नियंत्रण :–
फुदके, मिलीवग, गन्दी कीट एवं सूडी की रोकथाम के लिये मैलाथियान 50 प्रतिशत 1.5 ली0/हे0 800 ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें।
बीमारियाँ
1. थाईरम, कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से 2.5 ग्राम/कि.ग्रा. बीज को उपचारित करके बोये।
2. **खैरा रोग**:– जिंक सल्फेट 5 कि.ग्रा. को 20 किलो यूरिया तथा 2.5 कि.ग्रा. बुझा हुआ चुने को 500 ली0 पानी में मिलाकर प्रति हे0 की दर से रोपाई के 15–20 दिन के अन्दर छिडकाव करें।

औसतन खर्च –रु. 24000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु.15000– 37500/हे0

अक्टूबर के दूसरे सप्ताह से मार्च का अन्तिम सप्ताह
सरसों

उन्नत प्रजाति :– पूसा बोल्ड, क्रान्ति, रोहणी, वरुणा, वरदान एव् उर्वसी
लाईन से लाईन की दूरी :– 45–60 सें.मी.
पौधे से पौधे की दूरी :– 15–20 सें.मी.
खाद एवं उर्वरक :– गोबर की खाद 10–12 टन/हे0, नाइट्रोजन–80–120, फास्फोरस–60, पोटाश–40 एव् गन्धक–30 कि.ग्रा./हे0
खरपतवार नियन्त्रण :–
खरपतवारों को खुरपी से निराई कर नियत्रित करें।
बीमारियाँ एवं उपचार :–
1. झुलसा रोग एवं सफेद गेरूई :– डाइथेन–एम 45 (2 ग्राम/किलो) से बीज को उपचारित करें।
कीट एवं उपचार :–
(1) **एफिड–** रोगोर 30 ई.सी./एन्डोसल्फान 35 ई.सी/मैलाथियान 50 ई.सी. का 0.5 प्रतिशत घोल का छिड़काव करना चाहिए।

औसतन खर्च –रु.13500/हे0 **शुद्व लाभ** –रु.22000–36000/हे0

अप्रैल के प्रथम सप्ताह से जून का दूसरा सप्ताह
मूँग

उन्नत प्रजाति :– एस.एम.एल.–668, एस.एम.एल.–832, टाइप–44, पन्त मूँग–2, पी.एस.–16 एव् पूसा बिसाल
बीज की मात्रा :– 20 कि.ग्रा./हे0
लाईन से लाईन की दूरी :– 45 सें.मी.
खाद एवं उर्वरक :– 10–15 टन गोबर की खाद, नाईटोजन–20–40 एव् फास्फोरस–40–60 कि.ग्रा./हे0
सिचाई :– 3 से 4
खरपतवार नियत्रण :–
1. प्रथम निराई 20–25 दिन
2.दूसरी निराई–40–45 दिन
बीमारियाँ :–
1. **पीला मोजेक :–** मैटासिस्टोक्स (0.1%), मैलाथिओन (0.1%) का छिडकाव करे।
2. **लीफ कर्ल :–** मैटासिस्टोक्स (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव करना चाहिए।
कीट नियंत्रण :–
1. **हैयरी कैटरपीलर :–** एन्डोसल्फान 30 ई.सी. 1.5 ली0 का 1000 ली0 पानी में मिलाकर छिडकाव करें।
2. **लीफ होपर :–** मोनाक्रोटोफोस 40 ई.सी./एन्डोसल्फान 30 ई.सी. 1.5 ली0 का छिडकाव करें।

औसतन खर्च –रु.14500/हे0 **शुद्व लाभ** – रु 23500–39000/हे0

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोये।
3. उन्नत किस्म का बीज बोये।
4. अन्य वैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण एव् कीट प्रवन्ध अपनायें।
6. समय पर फसल की कटाई करें तब समय से मूँग की फसल अवशेष को भूमि में मिलायें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 165 से 308 रुपये प्रति दिन/हे0

धान–फूलगोभी–मूँग

जून के दूसरे सप्ताह से अक्टूबर का प्रथम सप्ताह
धान

उन्नत प्रजातियाँ :– साकेत–1, साकेत–4, नेरेन्द्र–1, पी.आर.एच.–10 एव् हाईब्रिड–986

रोपाई :– नर्सरी डालने के 22–25 दिन बाद 2–3 पौधे/हिल

लाईन से लाईन की दूरी :– 20 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 10 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– नाईटोजन–100, फास्फोरस–60 एव् पोटाश–40 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियत्रंण :–

(i) रोपाई के 48 घंटे के अन्दर ब्यूटाक्लोर 1.5 लीटर को 800 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव या बालू में मिला कर प्रयोग करें या आलमिक्स 20 कि.ग्रा./हे0 फसल में डालें।

कीट नियंत्रण :–

फुदके, मिलीवग, गन्दी कीट एवं सूडी की रोकथाम के लिये मैलाथियान 50 प्रतिशत 1.5 ली0/हे0 800 ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें।

बीमारियाँ

1. थाईरम, कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से 2.5 ग्राम/कि.ग्रा. बीज को उपचारित करके बोये।
2. **खैरा रोग:–** जिंक सल्फेट 5 कि.ग्रा. को 20 किलो यूरिया तथा 2.5 कि.ग्रा. बुझा हुआ चुने को 500 ली0 पानी में मिलाकर प्रति हे0 की दर से रोपाई के 15–20 दिन के अन्दर छिडकाव करें।

औसतन खर्च –रु. 24000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु.15000– 37500/हे0

अक्टूबर के दूसरे सप्ताह से फरवरी का अन्तिम सप्ताह
फूलगोभी

उन्नत प्रजातियाँ :– पूसा हाईब्रिड–2, पूसा सिथेंटिक, ईम्परूब्ड जापानी, पूसा सावनी, पूसा स्नोबाल एव् स्नोबाल–16

नर्सरी का समय :– जुलाई–अगस्त एक है0 खेत के लिये 250 ग्राम बीज की नर्सरी

रोपाई का समय :– अक्टूबर

पंक्ति से पंक्ति की दूरी :– 45–60 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 45 सें.मी.

खाद व उर्वरक :– गोबर की सडी खाद 30 टन/हे0, नाईट्रोजन–250, फास्फोरस–120 एव् पोटाश–120–150 कि.ग्रा./हे0

सिचाई :– 10–15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण :– खरपतवारों को एक या दो बार खुरपी से निकालना चाहिए।

कीट एवं व्याधियाँ :– डाईथेन एम–45 के साथ सेविन (2 ग्राम प्रति लीटर) पानी की दर से छिडकाव करें। 10 दिन के अन्तराल पर पुनः छिड़काव किया जा सकता है।

औसतन खर्च –रु. 50500/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 46500–75000/हे0

मार्च के अन्तिम सप्ताह से जून का दूसरा सप्ताह
मूँग

उन्नत प्रजाति :– एस.एम.एल.–668, एस.एम.एल.–832, टाइप–44, पन्त मूँग–2, पी.एस.–16 एव् पूसा बिसाल

बीज की मात्रा :– 20 कि.ग्रा./हे0

लाईन से लाईन की दूरी :– 45 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 10–15 टन गोबर की खाद, नाईटोजन–20–40 एव् फास्फोरस–40–60 कि.ग्रा./हे0

सिचाई :– 3 से 4

खरपतवार नियत्रण :–

1. प्रथम निराई 20–25 दिन
2. दूसरी निराई–40–45 दिन

बीमारियाँ :–

1. **पीला मोजेक :–** मैटासिस्टोक्स (0.1%), मैलाथिओन (0.1%) का छिड़काव करे।
2. **लीफ कर्ल :–** मैटासिस्टोक्स (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव करना चाहिए।

कीट नियंत्रण :–

1. **हैयरी कैटरपीलर :–** एन्डोसल्फान 30 ई.सी. 1.5 ली0 का 1000 ली0 पानी में मिलाकर छिडकाव करें।
2. **लीफ होपर :–** मोनाक्रोटोफोस 40 ई.सी./एन्डोसल्फान 30 ई.सी. 1.5 ली0 का छिडकाव करें।

औसतन खर्च –रु. 14500/हे0 **शुद्व लाभ** – रु 23500–39000/हे0

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजों को उपचारित करके बोये।
3. उन्नत किस्म का बीज बोये।
4. अन्य बैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण एवं कीट प्रवन्ध अपनायें।
6. समय पर फसल की कटाई करें तब समय से मूँग की फसल को भूमि में मिलायें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 232 से 415 रुपये प्रति दिन/हे0

धान–फूलगोभी–लोकी

जून के दूसरे सप्ताह से अक्टूबर का प्रथम सप्ताह
धान

उन्नत प्रजातियाँ :– साकेत–1, साकेत–4, नेरेन्द्र–1, पी.आर.एच.–10 एव् हाईब्रिड–986

रोपाई :– नर्सरी डालने के 22–25 दिन बाद 2–3 पौधे/हिल

लाईन से लाईन की दूरी :– 20 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 10 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– नाईटोजन–100, फास्फोरस–60 एव् पोटाश–40 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियत्रंण :–

(i) रोपाई के 48 घंटे के अन्दर ब्यूटाक्लोर 1.5 लीटर को 800 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव या बालू में मिला कर प्रयोग करें या आलमिक्स 20 कि.ग्रा./हे0 फसल में डालें।

कीट नियंत्रण :–

फुदके, मिलीवग, गन्दी कीट एवं सूडी की रोकथाम के लिये मैलाथियान 50 प्रतिशत 1.5 ली0/हे0 800 ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें।

बीमारियाँ

1. थाईरम, कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से 2.5 ग्राम/कि.ग्रा. बीज को उपचारित करके बोये।
2. **खैरा रोग:–** जिंक सल्फेट 5 कि.ग्रा. को 20 किलो यूरिया तथा 2.5 कि.ग्रा. बुझा हुआ चुने को 500 ली0 पानी में मिलाकर प्रति हे0 की दर से रोपाई के 15–20 दिन के अन्दर छिडकाव करें।

औसतन खर्च –रु. 24000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 15000– 37500/हे0

अक्टूबर के तीसरे सप्ताह से फरवरी का अन्तिम सप्ताह
फूलगोभी

उन्नत प्रजातियाँ :– पूसा हाईब्रिड–2, पूसा सिथेंटिक, ईम्परूब्ड जापानी, पूसा सावनी, पूसा स्नोबाल एव् स्नोबाल–16

नर्सरी का समय :– जुलाई–अगस्त एक हे0 खेत के लिये 250 ग्राम बीज की नर्सरी

रोपाई का समय :– अक्टूबर

पंक्ति से पंक्ति की दूरी :– 45–60 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 45 सें.मी.

खाद व उर्वरक :– गोबर की सडी खाद 30 टन/हे0, नाईट्रोजन–250, फास्फोरस–120 एव् पोटाश–120–150 कि.ग्रा./हे0

सिचाई :– 10–15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण :– खरपतवारों को एक या दो बार खुरपी से निकालना चाहिए।

कीट एवं व्याधियाँ :– डाईथेन एम–45 के साथ सेविन (2 ग्राम प्रति लीटर) पानी की दर से छिडकाव करें। दस दिन के अन्तराल पर पुनः छिड़काव जा सकता है।

औसतन खर्च –रु. 50500/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 46500–75000/हे0

मार्च के प्रथम सप्ताह से जून का अन्तिम सप्ताह
लोकी

उन्नत प्रजातियाँ :– बायो गौरव, पूसा सन्देश, पूसा नवीन, पूसा समर, गौरी एव् नरगिस

बीज दर :– 1.5 से 2.0 कि.ग्रा./हे0

लाईन से लाईन की दूरी :– 150 से.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 100 से.मी.

खाद एवं उर्वरक :– गोबर की खाद 25–30 टन/हे0, नाईट्रोजन–150, फास्फोरस–80 एव् पोटाश–60 कि.ग्रा./हे0

सिंचाई :– 5–6 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण :– आवश्यकतानुसार एक या दो बार निराई करे।

कीट एवं व्याधियाँ :–

1. तेला एवं फफूद की रोकथाम हेतु डाइमेथियोट 2 मिली तथा ड्राईथेन एम–45, 3 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से छिडकाव करें।
2. रस चूसने वाले कीटों एवं चूर्णी रोग की रोकथाम हेतु मोनोक्रोटोफास 1.5 मिली, केराथिन 2 मिली प्रति ली0 पानी की दर से छिडकाव करें।

औसतन खर्च –रु.13500/हे0 **शुद्व लाभ** – रु 45000–60000/हे0

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोये।
3. उन्नत किस्म का बीज बोये।
4. अन्य बैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण एव् कीट प्रवन्ध अपनायें।
6. समय पर फलो की तुड़ाई करें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 291 से 418 रुपये प्रति दिन/हे0

धान–मटर (उच्चीकृत क्यारी विधि)–भिन्डी (उच्चीकृत क्यारी विधि)

जून के दूसरे सप्ताह से सितम्बर का अन्तिम सप्ताह

धान

उन्नत प्रजातियाँ :– साकेत–1, साकेत–4, नेरेन्द्र–1, पी.आर.एच.–10 एव् हाईब्रिड–986

रोपाई :– नर्सरी डालने के 22–25 दिन बाद 2–3 पौधे/हिल

लाईन से लाईन की दूरी :– 20 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 10 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– नाईटोजन–100, फास्फोरस–60 एव् पोटाश–40 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियत्रंण :–

(i) रोपाई के 48 घंटे के अन्दर ब्यूटाक्लोर 1.5 लीटर को 800 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव या बालू में मिला कर प्रयोग करें या आलमिक्स 20 कि.ग्रा./हे0 फसल में डालें।

कीट नियंत्रण :–

फुदके, मिलीवग, गन्दी कीट एवं सूडी की रोकथाम के लिये मैलाथियान 50 प्रतिशत 1.5 ली0/हे0 800 ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें।

बीमारियाँ

1. थाईरम, कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से 2.5 ग्राम/कि.ग्रा. बीज को उपचारित करके बोये।
2. **खैरा रोग:–** जिंक सल्फेट 5 कि.ग्रा. को 20 किलो यूरिया तथा 2.5 कि.ग्रा. बुझा हुआ चुने को 500 ली0 पानी में मिलाकर प्रति हे0 की दर से रोपाई के 15–20 दिन के अन्दर छिडकाव करें।

औसतन खर्च –रु. 24500/हे0 **शुद्व लाभ** –रु.15000–37500/हे0

अक्टूबर के दूसरे सप्ताह से फरवरी का दूसरा सप्ताह

मटर

उन्नत प्रजाति :– अर्किल, बानबिला, आजाद पी–1, पन्त उपहार एव् आजाद पी–3

बीज दर :– 45 से 50 कि.ग्रा./हे0

पंक्ति से पंक्ति की दूरी :– 30 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 10 सें.मी.

खाद व उर्वरक :– गोबर की खाद 20 टन/हे0, नाइट्रोजन–20, फास्फोरस–60 एव् पोटाश–60 कि.ग्रा./हे0

सिचाई :– आवश्यकतानुसार एक हल्की सिंचाई फूल आते समय करना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण :– आवश्यकतानुसार एक या दो बार निराई करें।

सफेद गेरूई :– डाइथेन–एम 45 से 2 ग्राम/किलो बीज को उपचारित करें।

कीट नियंत्रण :–

1. **फली भेदक :–** एन्डोसल्फान 1.5 ली0 का 1000 ली0 पानी में मिलाकर छिडकाव करें।

औसतन खर्च –रु.26500/हे0 **शुद्व लाभ** – रु.39000–.75000/हे0

फरवरी के अन्तिम सप्ताह से जून का दूसरा सप्ताह

भिन्डी

उन्नत प्रजाति :– पूसा सावनी, पूसा मखवली, वर्षा, विजया, विशल, संकर भिन्डी एव अवंतिका

बीज दर :– 6–8 कि.ग्रा./ह0

पंक्ति से पंक्ति की दूरी :– 45–60 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 30 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– टन गोबर की खाद 20 टन/हे0, नाइट्रोजन–80, फास्फोरस–60 एव् पोटाश–40 कि.ग्रा./हे0

सिचाई :– 4–5 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए

खरपतवार नियंत्रण :– 4–5 निराई

कीट एवं व्याधिया :–

1. **तना तथा फल छेदक :–** क्विनालफास 2.5 ई.सी. की (2 मिली प्रति ली0) पानी में मिलाकर छिडकाब करें।
2. **जौसिड :–** इमीडाक्लोरापिड 200 एम की 0.5 मिली मात्रा प्रति ली0 पानी के साथ छिडकाव करना चाहिए।
3. **तेला एवं पउडरी मिल्डयू :–** डाइमेथियोट/एसेफेट की (2 मिली प्रति ली0) पानी के साथ छिड़काव करे।

औसतन खर्च –रु.41000/हे0 **शुद्व लाभ** – रु.36000–75000/हे0

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोये।
3. उन्नत किस्म का बीज बोये।
4. अन्य बैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण एव् कीट प्रवन्ध अपनायें।
6. समय पर फसल की कटाई करें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 246 से 513 रुपये प्रति दिन/हे0

धान–गेहूँ (शून्य कर्षण)–मूँग

जून के अन्तिम सप्ताह से अक्टूबर का प्रथम सप्ताह

धान

उन्नत प्रजातियाँ :– पूसा बासमती–1, पूसा–1121, पूसा–1460, सुगन्धा–5 एव् बासमती–370

रोपाई :– नर्सरी डालने के 22–25 दिन बाद 2–3 पौधे/हिल

खाद एवं उर्वरक :– नाईटोजन–100, फास्फोरस–60, पोटाश–40 एव् जिंक–25 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियत्रंण :–

रोपाई के 48 घंटे के अन्दर ब्यूटाक्लोर 1.5 लीटर को 800 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें या आलमिक्स 20 कि.ग्रा./हे0 फसल में डालें।

कीट नियंत्रण :–

फुदके, मिलीवग, गन्दी कीट एवं सूडी की रोकथाम के लिये मैलाथियान 50 प्रतिशत या क्यूनालफास 25 ई सी. 1.5 ली0/हे0 800 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करें ।

बीमारियाँ :–

1. थाईरम, कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू पी 2.5 ग्राम/कि0 बीज को उपचारित करके बोये।

2. **खैरा रोग:–** जिंक सल्फेट 5 कि.ग्रा. को 20 किलो यूरिया तथा 2.5 कि.ग्रा. बुझे हुए चूने को 500 ली0 पानी में मिलाकर प्रति हे0 में रोपाई के 15–20 दिन के अन्दर छिड़काव करें।

औसतन खर्च –रु. 27500/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 35500–57500/हे0

नवम्बर के दूसरे सप्ताह से अप्रैल का प्रथम सप्ताह

गेहूँ (शून्य कर्षण)

उन्नत प्रजाति :– पी.बी.डब्लू.–343, पी.बी.डब्लू.–373, पी.बी.डब्लू.–502, एच.डी.–2285, राज–3765, एच.डी.–2285, एच.डी.–2307, एच.डी.–2402 एव् डी.वी.डब्लू.–17

बीज दर व दूरी :– 100–120 कि0 ग्रा0/हे0

पंक्तियो की दूरी :– 15–20 सें.मी.

खाद व उर्वरक :– गोबर की खाद 10–15 टन/हे0, नाईट्रोजन–120, फास्फोरस–80 एव् पोटाश–60, कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियन्त्रण :–

चौडी एवं सकरी पत्ती वाले खरपतवार– टोटल – (सल्फासल्फुरान + मैट सल्फुरान 75 + 5% w/w) 1.25 ली0 प्रति हे0 का छिंडकाव बुवाई से 30–35 दिन में करें। ध्यान रहे कि मौसम साफ हो।

औसतन खर्च –रु.20500/हे0 **शुद्व लाभ** –रु.21500–41000/हे0

अप्रैल के दूसरे सप्ताह से जून का अंतिम सप्ताह

मूँग

उन्नत प्रजाति :– एस.एम.एल.–668, एस.एम.एल.–832, पन्त मूँग–2 एव् पी.एस.–16

बीज की मात्रा :– 20 कि.ग्रा./हे0

लाईन से लाईन से दूरी :– 45 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 10–15 टन गोबर की खाद, नाईटोजन–20–40 एव् फास्फोरस–40–60 कि.ग्रा./हे0

सिचाई :– 3 से 4

खरपतवार नियत्रण :–

1. प्रथम निराई 20–25 दिन

2.दूसरी निराई–40–45 दिन

बीमारियाँ :–

1. पीला मोजेक :– मैटासिस्टोक्स (0.1%), मैलाथिओन (0.1%) का छिडकाव करे।

2. लीफ कर्ल :– मैटासिस्टोक्स (0.1 प्रतिशत) का छिडकाव करना चाहिए।

कीट नियत्रण :–

1. हैयरी कैटरपीलर :– एन्डोसल्फान 30 ई.सी. 1.5 ली0 का 1000 ली0 पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

2. लीफ होपर :– मोनाक्रोटोफोस 40 ई.सी./एन्डोसल्फान 30 ई.सी. 1.5 ली0 का छिड़काव करें।

औसतन खर्च–रु.14500/हे0 **शुद्व लाभ** – रु 23500–39000/हे0

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. .बीजो को उपचारित करके बोये।
3. उन्नत किस्म का बीज बोये।
4. अन्य बैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण एव् कीट प्रवन्ध अपनायें।
6. समय पर खरपतवार नियन्त्रण करें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 232 से 375 रुपये प्रति दिन/हे0

धान–गेहूँ (शून्य कर्षण)–ढैंचा

जून के अन्तिम सप्ताह से अक्टूबर का प्रथम सप्ताह
धान

उन्नत प्रजातियाँ :– पूसा बासमती–1, पूसा–1121, पूसा–1460, सुगन्धा–5 एव् बासमती–370

रोपाई :– नर्सरी डालने के 22–25 दिन बाद 2–3 पौधे/हिल

खाद एवं उर्वरक :– नाईटोजन–100, फास्फोरस–60, पोटाश–40 एव् जिंक–25 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियत्रंण :–

रोपाई के 48 घंटे के अन्दर ब्यूटाक्लोर 1.5 लीटर को 800 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें या आलमिक्स 20 कि.ग्रा./हे0 फसल में डालें।

कीट नियंत्रण :–

फुदके, मिलीवग, गन्दी कीट एवं सूडी की रोकथाम के लिये मैलाथियान 50 प्रतिशत या क्यूनालफास 25 ई सी. 1.5 ली0/हे0 800 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करें ।

बीमारियाँ :–

1. थाईरम, कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू पी 2.5 ग्राम/कि0 बीज को उपचारित करके बोये।

2. **खैरा रोग:–** जिंक सल्फेट 5 कि.ग्रा. को 20 किलो यूरिया तथा 2.5 कि.ग्रा. बुझे हुए चूने को 500 ली0 पानी में मिलाकर प्रति हे0 में रोपाई के 15–20 दिन के अन्दर छिड़काव करें।

औसतन खर्च –रु. 27500/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 35500–57500/हे0

नवम्बर के दूसरे सप्ताह से अप्रैल का प्रथम सप्ताह
गेहूँ (शून्य कर्षण)

उन्नत प्रजाति :– पी.बी.डब्लू.–343, पी.बी.डब्लू.–373, पी.बी.डब्लू.–502, एच. डी.–2285, राज–3765, एच.डी.–2285, एच.डी.–2307, एच.डी.–2402 एव् डी. वी.डब्लू.–17

बीज दर व दूरी :– 100–120 कि0 ग्रा0/हे0

पंक्तियो की दूरी :– 15–20 सें.मी.

खाद व उर्वरक :– गोबर की खाद 10–15 टन/हे0, नाईट्रोजन–120, फास्फोरस–80 एव् पोटाश–60, कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियन्त्रण :–

चौडी एवं सकरी पत्ती वाले खरपतवार– टोटल – (सल्फासल्फुरान + मैट सल्फुरान 75 + 5% w/w) 1.25 ली0 प्रति हे0 का छिंडकाव बुवाई से 30–35 दिन में करें। ध्यान रहे कि मौसम साफ हो।

औसतन खर्च –रु.20500/हे0 **शुद्व लाभ** –रु.21500–41000/हे0

मई के दूसरे सप्ताह से जून का अन्तिम सप्ताह
ढैंचा

उन्नत प्रजाति :– सेस पी0डी0सी0एस0आर0–1, सेस पन्त–1, सेस.एच–1, सेस एन0बी0पी0जी0आर0–1

बीज दर :– 80–100 कि.ग्रा./हे0

बुआई का तरीका :–

लाईन से लाईन की दूरी :– 30 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 15–20 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– नाइट्रोजन–40, फास्फोरस–60 एव् पोटाश–40 कि.ग्रा./हे0

सिचाई :– 5–7

खरपतवार नियंत्रण :– एक बार निराई

औसतन खर्च –रु. 4500/हे0 **लाभ–** भूमि की दशा में सुधार एवं उर्वरकों की बचत

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोयें।
3. उन्नत किस्म का बीज बोयें।
4. अन्य वैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण एव् कीट प्रवन्ध अपनायें।
6. समय पर फसल की कटाई करें तब समय से ढैंचे की फसल को भूमि में मिलायें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 156 से 269 रुपये प्रति दिन/हे0

धान–गेहूँ (प्रक्षेत्र विशेष पोषण प्रबन्धन)

जून के अन्तिम सप्ताह से अक्टूबर का दूसरा सप्ताह

धान

उन्नत प्रजातियाँ :– पूसा बासमती–1, पूसा–1121, पूसा–1460, सुगन्धा–5 एव् बासमती–370

रोपाई :– नर्सरी डालने के 22–25 दिन बाद 2–3 पौधे/हिल

खाद एवं उर्वरक :– नाईटोजन–100, फास्फोरस–60, पोटाश–40 एव् जिंक–25 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियत्रंण :–

रोपाई के 48 घंटे के अन्दर ब्यूटाक्लोर 1.5 लीटर को 800 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें या आलमिक्स 20 कि.ग्रा. /हे0 फसल में डालें।

कीट नियंत्रण :–

फुदके, मिलीवग, गन्दी कीट एवं सूडी की रोकथाम के लिये मैलाथियान 50 प्रतिशत या क्यूनालफास 25 ई सी. 1.5 ली0/हे0 800 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करें ।

बीमारियाँ :–

1. थाईरम, कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू पी 2.5 ग्राम/कि0 बीज को उपचारित करके बोये।
2. **खैरा रोग:–** जिंक सल्फेट 5 कि.ग्रा. को 20 किलो यूरिया तथा 2.5 कि.ग्रा. बुझे हुए चूने को 500 ली0 पानी में मिलाकर प्रति हे0 में रोपाई के 15–20 दिन के अन्दर छिडकाव करें।

औसतन खर्च –रु. 29000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 45500–68000/हे0

नवम्बर के दूसरे सप्ताह से अप्रैल का प्रथम सप्ताह

गेहूँ

उन्नत प्रजाति :– पी.बी.डब्लू–343, पी.बी.डब्लू.–373, पी.बी.डब्लू.–502, एच.डी.–2285, राज–3765, एच.डी.–2307, एच.डी.–2402 एव् डी.वी.डब्लू.–17

बीज दर :– 100–120 कि.ग्रा./हे0

पंक्ति से पंक्ति की दूरी :– 15–20 से.मी.

खाद व उर्वरक :– गोबर की खाद 10–15 टन/हे0, नाईट्रोजन–120, फास्फोरस–80, पोटाश–60, गधंक–30, जिंक–25 एव् बोरान–5 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियन्त्रण :–

चौडी एवं सकरी पत्ती वाले खरपतवार :– टोटल (सल्फासल्फुरान + मैट सल्फुरान 75 + 5% w/w) 1.25 ली0 प्रति हे0 का छिंडकाव बुवाई से 30–35 दिन में करें। ध्यान रहे कि मौसम साफ हो।

औसतन खर्च –रु.23000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु.35000–45000/हे0

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोयें।
3. उन्नत किस्म का बीज बोये।
4. अन्य बैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण, खरपतवार एव् कीट प्रबन्धन अपनायें।
6. भूमि परीक्षण करायें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 221 से 309 रुपये प्रति दिन/हे0

मक्का–आलू–मूँग

जून के प्रथम सप्ताह से सितम्बर का प्रथम सप्ताह
मक्का

उन्नत प्रजाति :– नवीन, कंचन, स्वेता, आजाद, सूर्या, उत्तम, पूसा अर्लीहइब्रिड, गौरव एव्, हा0 स्वीट पर्ल

बीज :– 20–25 कि0 ग्रा0/हे0

लाईन से लाईन की दूरी :– 60 सें.मी.

पौधे पौधे की दूरी :– 25 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 10–15 टन गोबर की खाद, नाइट्रोजन–100–120, फास्फोरस–60, पोटाश–60 एव् जिंक–25 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियंत्रण :– बुवाई के 24 घंटे के अन्दर ऐट्राजिन डबल्यू.पी. 2 कि.ग्रा. का 800 लीटर पानी प्रति है0 की दर से छिडकाव करें। या 2–3 निराई करें।

कीट एवं रोकथाम :– (1) **तना छेदक**–1.5 ली0 एन्डोसल्फान 35 ई.सी. या क्यूनालोफास 25 प्रतिशत ईसी एक लीटर को 1000 लीटर पानी के साथ मिलाकर छिडकाव करें।

(2) **सूट फ्लाई**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई के समय कूड़ में डाले।

(3) **सफेद लट**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई से पहले मिट्टी में मिला दें।

औसतन खर्च –रु. 17000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 14000 –37500/हे0

अक्टूबर के दूसरे सप्ताह से फरवरी का दूसरा सप्ताह
आलू

उन्नत प्रजातियाँ :– कु0 बहार, कु0 सदाबहार, कु0 चिपसोना–1, कु0 बादशाह, कु0 चन्द्रमुखी एव् कु0 चिपसोना–2

बीज की मात्रा :– 20–25 कु0

लाईन से लाईन की दूरी :– 50–60 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 20–25 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 20–25 टन गोबर की खाद, नाईटोजन–180, फास्फोरस–120 एव् पोटाश–150 कि.ग्रा./हे0

पौधों पर मिट्टी चढाना :– जब पौधे 15–20 सें.मी. के हो जाये।

कीट नियंत्रण :– कार्बोफयूरान 3 जी की 30 कि.ग्रा./हे0 बुआई के समय डालें।

बीमारियाँ :–

1. पछेती एव् अगेती झुलसा :–

(i) रोग प्रतिरोधक प्रजातियाँ उगाये

(ii) मेटालेक्सिल युक्त रसायन 2 कि.ग्रा./हे0 की दर से छिडकाव करें।

2. मोजेक– रोगोर–30 ई0सी0 की 600–700 मी0 ली0 मात्रा 500–600 ली0/हे0 पानी में घोलकर छिडकाव करें।

औसतन खर्च –रु.52000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु.50000–87000/हे0

मार्च के प्रथम सप्ताह से जून का दूसरा सप्ताह
मूँग

उन्नत प्रजाति :– एस एम एल–668, एस.एम.एल.–832, टाइप–44, पन्त मूँग–2, पी.एस.–16 एव् पूसा बिसाल

बीज की मात्रा :– 20 कि.ग्रा./हे0

लाईन से लाईन की दूरी :– 45 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 10–15 टन गोबर की खाद, नाईटोजन–20–40 एव् फास्फोरस–40–60 कि.ग्रा./हे0

सिचाई :– 3 से 4

खरपतवार नियत्रण :–

1. प्रथम निराई 20–25 दिन
2. दूसरी निराई–40–45 दिन

बीमारियाँ :–

1. पीला मोजेक :– मैटासिस्टोक्स (0.1%), मैलाथिओन (0.1%) का छिड़काव करना चाहिए।

2. लीफ कर्ल :– मैटासिस्टोक्स (0.1 प्रतिशत) का छिडकाव करना चाहिए।

कीट नियंत्रण :–

1. **हैयरी कैटरपीलर :–** एन्डोसल्फान 30 ई.सी. 1.5 ली0 का 1000 ली0 पानी में मिलाकर छिडकाव करें।
2. **लीफ होपर :–** मोनाक्रोटोफोस 40 ई.सी./एन्डोसल्फान 30 ई.सी. 1.5 ली0 का छिडकाव करना चाहिए।

औसतन खर्च –रु.14500/हे0 **शुद्व लाभ** – रु.23500–39000/हे0

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोये।
3. उन्नत किस्म का बीज बोये।
4. अन्य बैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण, खरपतवार एव् कीट प्रवन्धन अपनायें।
6. समय से मूँग की फसल को भूमि में मिलायें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 239 से 447 रुपये प्रति दिन/हे0

मक्का–तोरिया–गेहूँ

जून के प्रथम सप्ताह से सितम्बर का प्रथम सप्ताह
मक्का

उन्नत प्रजाति :– नवीन, कंचन, स्वेता, आजाद, सूर्या, उत्तम, पूसा अर्लीहाईब्रिड, गौरव एव्, हा0 स्वीट पर्ल

बीज :– 20–25 कि0 ग्रा0 / हे0

लाईन से लाईन की दूरी :– 60 सें.मी.

पौधे पौधे की दूरी :– 25 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 10–15 टन गोबर की खाद, नाइट्रोजन–100–120, फास्फोरस–60, पोटाश–60 एव् जिंक–25 कि.ग्रा. / हे0

खरपतवार नियंत्रण :– बुवाई के 24 घंटे के अन्दर ऐट्राजिन डवल्यू पी 2 कि. ग्रा. का 800 लीटर पानी प्रति हे0 की दर से छिडकाव करें। या 2–3 निराई करें।

कीट एवं रोकथाम :– (1) **तना छेदक**–1.5 ली0 एन्डोसल्फान 35 ई.सी. या क्यूनालोफास 25 प्रतिशत ईसी एक लीटर को 1000 लीटर पानी के साथ मिलाकर छिडकाव करें।

(2) **सूट फ्लाई**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा. / हे0 की दर से बुआई के समय कूड़ में डाले।

(3) **सफेद लट**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा. / हे0 की दर से बुआई से पहले मिट्टी में मिला दें।

औसतन खर्च –रु. 17000 / हे0 **शुद्ध लाभ** –रु. 14000 –37500 / हे0

सितम्बर के दूसरे सप्ताह से दिसम्बर का प्रथम सप्ताह
तोरिया

उन्नत प्रजाति :– पी.टी.–303, पी.टी.–507 एंव् भवानी टा.–9

बीज :– 5–6 कि.ग्रा. / हे0

लाईन से लाईन की दूरी :– 45 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 15–20 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– गोबर की खाद 10–12 टन / हे0, नाइट्रोजन–80–120, फास्फोरस–60, पोटाश–40 एव् गन्धक–30 कि.ग्रा. / हे0

खरपतवार नियन्त्रण :–

(1) खरपतवारों को खुरपी से निराई कर नियत्रित करें।

बीमारियां एवं उपचार :–

झुलसा रोग एवं सफेद गेरूई :–

डाइथेन–एम 45 से 2 ग्राम / किलो बीज को उपचारित करें।

कीट एवं उपचार :–

एफिड :– रोगोर 30 ई.सी. / एन्डोसल्फान 35 ई.सी. / मैलाथियान 50 ई.सी. का 0.5 प्रतिशत घोल का छिडकाव करना चाहिए।

औसतन खर्च –रु.11500 / हे0 **शुद्ध लाभ** –रु 15000–26500 / हे0

दिसम्बर के दूसरे सप्ताह से अप्रैल के अन्तिम सप्ताह
गेहूँ

उन्नत प्रजाति :– पी.बी.डब्लू.–226, पी.बी.डब्लू.–373, पी.बी.डब्लू.–468, यू. पी.–2338, यू.पी.–2425, एच. डी. 2643, राज 3765, एच.डी. 2285, एच.डी. 2307, एच.डी. 2402 एवं डी.वी.डब्लू.–16

बीज दर :– 100–120 कि.ग्रा. / हे0

पंक्तियो की दूरी :– 15–20 से.मी.

खाद व उर्वरक :– गोबर की खाद 10–15 टन / हे0, नाईट्रोजन–120, फास्फोरस–80, पोटाश–60 एव् गधंक–30 कि.ग्रा. / हे0

खरपतवार नियन्त्रण–

1. **चौडी पत्ती वाले–** 2–4–डी (सोडियम साल्ट) 80 प्रतिशत डब्लु. पी की 6. 25 ग्राम मात्रा 500–600 ली0 पानी के साथ मिलाकर बुआई के 30–35 दिन बाद छिडकाव करें।
2. **संकरी पत्ती वाले–** आइसोप्राटयूरान 50 प्रतिशत डब्लु पी की 1500 ग्रा मात्रा 500–600 लीटर पानी में मिलाकर बुआई के 30–35 दिन बाद छिडकाव करना चाहिए।
3. **चौडी एवं सकरी पत्ती वाले खरपतवार–** टोटल– (सल्फासल्फुरान + मैट सल्फुरान 75 + 5% w/w) 1.25 ली0 प्रति हे0 का छिंडकाव बुवाई से 30–35 दिन में करें। ध्यान रहे कि मौसम साफ हो।

औसतन खर्च –रु.21000 / हे0 **शुद्ध लाभ** – रु.22500 – 39000 / हे0

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोये।
3. उनन्त किस्म का बीज बोये।
4. अन्य बैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण खरपतवार एव् कीट प्रवन्ध अपनायें।
6. समय पर फसल की कटाई करें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 141 से 282 रुपये प्रति दिन / हे0

मक्का–सरसों–मूँग

जून के प्रथम सप्ताह से सितम्बर का प्रथम सप्ताह
मक्का

उन्नत प्रजाति :– नवीन, कंचन, स्वेता, आजाद, सूर्या, उत्तम, पूसा अर्लीहइब्रिड, गौरव एव्, हा0 स्वीट पर्ल

बीज दर :– 20–25 कि0 ग्रा0/हे0

लाईन से लाईन की दूरी :– 60 सें.मी.

पौधे पौधे की दूरी :– 25 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 10–15 टन गोबर की खाद, नाइट्रोजन–100–120, फास्फोरस–60, पोटाश–60 एव् जिंक–25 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियंत्रण :– बुवाई के 24 घंटे के अन्दर ऐट्राजिन डबल्यू.पी. 2 कि. ग्रा. का 800 लीटर पानी प्रति हे0 की दर से छिडकाव करें। या 2–3 निराई करें।

कीट एवं रोकथाम :– (1) **तना छेदक**–1.5 ली0 एन्डोसल्फान 35 ई.सी. या क्यूनालोफास 25 प्रतिशत ईसी एक लीटर को 1000 लीटर पानी के साथ मिलाकर छिडकाव करें।

(2) **सूट फ्लाई**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई के समय कूड़ में डाले।

(3) **सफेद लट**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई से पहले मिट्टी में मिला दें।

औसतन खर्च –रु. 17000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 14000–37500/हे0

अक्टूबर के दूसरे सप्ताह से मार्च का अन्तिम सप्ताह
सरसों

उन्नत प्रजाति :– पूसा बोल्ड, क्रान्ति, रोहणी, वरुणा, वरदान एव् उर्वसी

लाईन से लाईन की दूरी :– 45–60 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 15–20 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– गोबर की खाद 10–12 टन/हे0, नाइट्रोजन–80–120, फास्फोरस–60, पोटाश–40 एव् गन्धक–30 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियन्त्रण :–

खरपतवारों को खुरपी से निराई कर नियत्रित करें।

बीमारियाँ एवं उपचार :–

1. झुलसा रोग एवं सफेद गेरूई :– डाइथेन–एम 45 (2 ग्राम/किलो) से बीज को उपचारित करें।

कीट एवं उपचार :–

एफिड– रोगोर 30 ई.सी./एन्डोसल्फान 35 ई.सी/मैलाथियान 50 ई.सी. का 0.5 प्रतिशत घोल का छिड़काव करना चाहिए।

औसतन खर्च –रु. 13500/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 24000 –47500/हे0

अप्रैल के प्रथम सप्ताह से जून का दूसरा सप्ताह
मूँग

उन्नत प्रजाति :– एस एम एल–668, एस.एम.एल.–832, टाइप–44, पन्त मूँग–2, पी.एस.–16 एव् पूसा बिसाल

बीज की मात्रा :– 20 कि.ग्रा./हे0

लाईन से लाईन से दूरी :– 45 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 10–15 टन गोबर की खाद, नाईटोजन–20–40 एव् फास्फोरस–40–60 कि.ग्रा./हे0

सिचाई :– 3 से 4

खरपतवार नियत्रण :–

1. प्रथम निराई 20–25 दिन
2. दूसरी निराई–40–45 दिन

बीमारियाँ :–

1. पीला मोजेक :– मैटासिस्टोक्स (0.1%), मैलाथिओन (0.1%) का छिड़काव करे।

2. लीफ कर्ल :– मैटासिस्टोक्स (0.1 प्रतिशत) का छिडकाव करना चाहिए।

कीट नियंत्रण :–

1. हैयरी कैटरपीलर :– एन्डोसल्फान 30 ई.सी. 1.5 ली0 का 1000 ली0 पानी में मिलाकर छिडकाव करें।

2. लीफ होपर :– मोनाक्रोटोफोस 40 ई.सी./एन्डोसल्फान 30 ई.सी. 1.5 ली0 का छिडकाव करें।

औसतन खर्च –रु.14500/हे0 **शुद्व लाभ** – रु.23500–39000/हे0

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोये।
3. उनन्त किस्म का बीज बोयें।
4. अन्य वैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण खरपतवार एव् कीट प्रवन्ध अपनायें।
6. समय पर फसल की कटाई करें तध समय से मूँग की फसल को भूमि में मिलायें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 168 से 339 रुपये प्रति दिन /हे0

मक्का+अरहर (उच्चीकृत क्यारी विधि)–गेहूँ

मई के अन्तिम सप्ताह से नवम्बर का अन्तिम सप्ताह

मक्का+अरहर

उन्नत प्रजाति :– मक्का–नवीन, कंचन, स्वेता, आजाद एंव् सूर्या
अरहर–टाइप–21, यू.पी.ए.एस 120, मनक एंव् परस
बीज दर :– मक्का–20–25 कि.ग्रा./हे0, अरहर–12–15 कि.ग्रा./हे0
लाईन से लाईन व पौधे पौधे की दूरी :– मक्का–60x25 सें.मी., अरहर–60x25 सें.मी.
खाद एवं उर्वरक :– 10–15 टन गोबर की खाद, नाइट्रोजन–100, फास्फोरस–60, पोटाष–60, एंव् जिंक–25 कि.ग्रा./हे0
खरपतवार नियंत्रण :–

- बुवाई के तुरन्त बाद 24 घन्टे के अन्दर 3 किग्रा लासो नामक खरपतवारनाशी को 1000 ली0 पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिडके।
- एक माह के अन्दर खुरपी से एक निराई आवश्य करें ।

कीट एवं रोग नियंत्रण :–
मक्का :–
1) तना छेदक–1.5 ली0 एन्डोसल्फान 35 ई.सी. या क्यूनालोफास 25 प्रतिशत ई.सी. 1000 मि.ली. को 1000 ली0 पानी के साथ मिलाकर छिडकाव करें।
(2) सूट फ्लाई–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई के समय नालियों में डाले।
(3) सफेद ग्रब–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की मात्रा को बुआई से पहले मिट्टी में मिला दें।
अरहर :–
1. फली बेधक एवं लीफ रोलर कीट :–

- थायोडान 1.5 लीटर को 700 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर एक या दो छिडकाव 15 दिन के अन्तर पर करें।

2. उकठा एव्म तना सडनः :–
3–4 साल तक दुबारा खेत में अरहर न बोई जाय जिसमें यह रोग लग चुका हो । ज्वार, अरहर मिश्रित बोने से भी रोग कम लगता है तथा फसल चक्र अपनाए।

औसतन खर्च –रु. 13500/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 37500–70000/हे0

दिसम्बर के प्रथम सप्ताह से अप्रैल का दूसरा सप्ताह

गेहूँ

उन्नत प्रजाति :– पी.बी.डब्लू.–226, पी.बी.डब्लू.–373, पी.बी.डब्लू.–502, एच. डी. 2643, राज 3765, एच.डी. 2733, एच.डी. 2687, एच.डी. 2307, एच.डी. 2402 एव् डी.वी. डब्लू.–16
बीज दर व दूरी :– 100–120 कि.ग्रा./हे0
पंक्तियो की दूरी :– 15–20 से.मी.
खाद व उर्वरक :– गोबर की खाद 10–15 टन/हे0, नाईट्रोजन–120, फास्फोरस–80, पोटाश–60 एव् गधंक–30 कि. ग्रा./हे0
खरपतवार नियन्त्रण–
1. चौडी पत्ती वाले– 2–4–डी (सोडियम साल्ट) 80 प्रतिशत डब्लु. पी की 6.25 ग्राम मात्रा 500–600 ली0 पानी के साथ मिलाकर बुआई के 30–35 दिन बाद छिडकाव करें।
2. संकरी पत्ती वाले– आइसोप्राटयूरान 50 प्रतिशत डब्लु पी की 1500 ग्रा मात्रा 500–600 लीटर पानी में मिलाकर बुआई के 30–35 दिन बाद छिडकाव करना चाहिए।
3. चौडी एवं सकरी पत्ती वाले खरपतवार– टोटल – (सल्फासल्फुरान + मैट सल्फुरान 75 + 5% w/w) 1.25 ली0 प्रति हे0 का छिंडकाव बुवाई से 30–35 दिन में करें। ध्यान रहे कि मौसम साफ हो।

औसतन खर्च –रु.21000/हे0 **शुद्व लाभ** – रु 22500 – 40000/हे0

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोये।
3. उनन्त किस्म का बीज बोये।
4. अन्य वैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण खरपतवार एव् कीट प्रबन्ध अपनायें।
6. लवणीय तथा क्षारीय भूमि में अरहर न करें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 164 से 301 रुपये प्रति दिन/हे0

मक्का–आलू–भिन्डी

जून के प्रथम सप्ताह से सितम्बर का प्रथम सप्ताह
मक्का

उन्नत प्रजाति :– नवीन, कंचन, स्वेता, आजाद, सूर्या, उत्तम, पूसा अर्लीहइब्रिड, गौरव एव्, हा0 स्वीट पर्ल

बीज की मात्रा :– 20–25 कि0 ग्रा0/हे0

लाईन से लाईन की दूरी :– 60 सें.मी.

पौधे पौधे की दूरी :– 25 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 10–15 टन गोबर की खाद, नाइट्रोजन–100–120, फास्फोरस–60, पोटाश–60 एव् जिंक–25 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियंत्रण :– बुवाई के 24 घंटे के अन्दर ऐट्राजिन डबल्यू.पी. 2 कि. ग्रा. का 800 लीटर पानी प्रति हे0 की दर से छिडकाव करें। या 2–3 निराई करें।

कीट एवं रोकथाम :– (1) **तना छेदक**–1.5 ली0 एन्डोसल्फान 35 ई.सी. या क्यूनालोफास 25 प्रतिशत ईसी एक लीटर को 1000 लीटर पानी के साथ मिलाकर छिडकाव करें।

(2) **सूट फ्लाई**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई के समय कूड़ में डाले।

(3) **सफेद लट**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई से पहले मिट्टी में मिला दें।

औसतन खर्च –रु. 17000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 14000 –37500/हे0

अक्टूबर के प्रथम सप्ताह से फरवरी का दूसरा सप्ताह
आलू

उन्नत प्रजातियाँ :– कु0 बहार, कु0 सदाबहार, कु0 चिपसोना–1, कु0 बादशाह, कु0 चन्द्रमुखी एव् कु0 चिपसोना–2

बीज की मात्रा :– 20–25 कु0

लाईन से लाईन से दूरी :– 50–60 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 20–25 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 20–25 टन गोबर की खाद, नाईटोजन–180, फास्फोरस–120 एव् पोटाश–150 कि.ग्रा./हे0

पौधों पर मिट्टी चढाना :– जब पौधे 15–20 सें.मी. के हो जाये।

कीट नियंत्रण :– कार्बोफयूरान 3 जी की 30 कि.ग्रा./हे0 बुआई के समय डालें।

बीमारियाँ :–

1. पछेती एव् अगेती झुलसा :–

(i) रोग प्रतिरोधक प्रजातियाँ उगाये

(ii) मेटालेक्सिल युक्त रसायन 2 कि.ग्रा./हे0 की दर से छिडकाव करें।

2. मोजेक– रोगोर–30 ई0सी0 की 600–700 मी0 ली0 मात्रा 500–600 ली0/हे0 पानी में घोलकर छिडकाव करें।

औसतन खर्च –रु.52000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु.50000–87000/हे0

फरवरी के अन्तिम सप्ताह से जून का दूसरा सप्ताह
भिन्डी

उन्नत प्रजाति :– पूसा सावनी, पूसा मखवली, वर्षा, विजया, विशल, संकर भिन्डी एव अवंतिका

बीज दर :– 6–8 कि.ग्रा./ह0

पंक्ति से पंक्ति की दूरी :– 45–60 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 30 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– टन गोबर की खाद 20 टन/हे0, नाइट्रोजन–80, फास्फोरस–60 एव् पोटाश–40 कि.ग्रा./हे0

सिचाई :– 4–5 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए

खरपतवार नियंत्रण :– 4–5 निराई

कीट एवं व्याधिया :–

1. तना तथा फल छेदक :– क्विनालफास 2.5 ई.सी. की (2 मिली प्रति ली0) पानी में मिलाकर छिडकाब करें।

2. जौसिड :– इमीडाक्लोरापिड 200 एम की 0.5 मिली मात्रा प्रति ली0 पानी के साथ छिडकाव करना चाहिए।

3. तेला एवं पउडरी मिल्डयू :– डाइमेथियोट/एसेफेट की (2 मिली प्रति ली0) पानी के साथ छिड़काव करे।

औसतन खर्च –रु.41000/हे0 **शुद्व लाभ** – रु.36000–75000/हे0

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोये।
3. उनन्त किस्म का बीज बोये।
4. अन्य वैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण खरपतवार एव् कीट प्रवन्ध अपनायें।
6. समय पर फसल की कटाई एवं भिन्डी की तुड़ाई करें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 273 से 546 रुपये प्रति दिन/हे0

मक्का–आलू–प्याज

जून के प्रथम सप्ताह से सितम्बर का प्रथम सप्ताह
मक्का

उन्नत प्रजाति :– नवीन, कंचन, स्वेता, आजाद, सूर्या, उत्तम, पूसा अर्लीहइब्रिड, गौरव एव्, हा0 स्वीट पर्ल

बीज दर :– 20–25 कि0 ग्रा0/हे0

लाईन से लाईन की दूरी :– 60 सें.मी.

पौधे पौधे की दूरी :– 25 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 10–15 टन गोबर की खाद, नाइट्रोजन–100–120, फास्फोरस–60, पोटाश–60 एव् जिंक–25 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियंत्रण :– बुवाई के 24 घंटे के अन्दर ऐट्राजिन डबल्यू.पी. 2 कि. ग्रा. का 800 लीटर पानी प्रति हे0 की दर से छिडकाव करें। या 2–3 निराई करें।

कीट एवं रोकथाम :– (1) **तना छेदक**–1.5 ली0 एन्डोसल्फान 35 ई.सी. या क्यूनालोफास 25 प्रतिशत ईसी एक लीटर को 1000 लीटर पानी के साथ मिलाकर छिडकाव करें।

(2) **सूट फ्लाई**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई के समय कूड़ में डाले।

(3) **सफेद लट**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई से पहले मिट्टी में मिला दें।

औसतन खर्च –रु. 17000/हे0 **शुद्ध लाभ** –रु. 14000 –37500/हे0

अक्टूबर के दूसरे सप्ताह से फरवरी का तृतीय सप्ताह
आलू

उन्नत प्रजातियाँ :– कु0 बहार, कु0 सदाबहार, कु0 चिपसोना–1, कु0 बादशाह, कु0 चन्द्रमुखी एव् कु0 चिपसोना–2

बीज की मात्रा :– 20–25 कु0

लाईन से लाईन से दूरी :– 50–60 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 20–25 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 20–25 टन गोबर की खाद, नाईटोजन–180, फास्फोरस–120 एव् पोटाश–150 कि.ग्रा./हे0

पौधों पर मिट्टी चढाना :– जब पौधे 15–20 सें.मी. के हो जाये।

कीट नियत्रण :– कार्बोफयूरान 3 जी की 30 कि.ग्रा./हे0 बुआई के समय डालें।

बीमारियाँ :–

1. पछेती एव् अगेती झुलसा :–

(i) रोग प्रतिरोधक प्रजातियाँ उगाये

(ii) मेटालेक्सिल युक्त रसायन 2 कि.ग्रा./हे0 की दर से छिडकाव करें।

2. मोजेक– रोगोर–30 ई0सी0 की 600–700 मी0 ली0 मात्रा 500–600 ली0/हे0 पानी में घोलकर छिडकाव करें।

औसतन खर्च –रु.52000/हे0 **शुद्ध लाभ** –रु.50000–87000/हे0

फरवरी के अन्तिम सप्ताह से मई का अन्तिम सप्ताह
प्याज

उन्नम प्रजाति :– नासिक रेड, एन 53, पूसा रेड, पूसा रत्नार एव् एफडीआर

नर्सरी बुआई का समय :– 15 अक्टुबर से 15 नवम्बर

बीज की दर :– 10 से 12 कि.ग्रा./हे0

लाईन से लाईन :– 30 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 10–15 सें.मी.

खाद व उर्वरक :– 20–30 टन गोबर की खाद, नाइट्रोजन–80–100, फास्फोरस–50 एवं् पोटाश–100 कि.ग्रा./हे0

सिंचाई :– 10–15 दिन के अन्तराल पर सिचाई करते रहना चाहिए।

खरपतवार एवं निराई :–

गुडाई नियंत्रण :– 2–3 निराई–गुडाई

औसतन खर्च –रु.30000/हे0 **शुद्ध लाभ** – रु.39000–81500/हे0

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोयें।
3. उनन्त किस्म का बीज बोये।
4. अन्य बैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण खरपतवार एव् कीट प्रवन्ध अपनायें।
6. समय पर आलू एवं प्याज की खुदाई करें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 281 से 564 रुपये प्रति दिन/हे0

मक्का–तोरिया–खरबूजा

जून के प्रथम सप्ताह से सितम्बर का प्रथम सप्ताह
मक्का

उन्नत प्रजाति :– नवीन, कंचन, स्वेता, आजाद, सूर्या, उत्तम, पूसा अर्लीहइब्रिड, गौरव एव्, हा0 स्वीट पर्ल

बीज दर :– 20–25 कि0 ग्रा0/हे0

लाईन से लाईन की दूरी :– 60 सें.मी.

पौधे पौधे की दूरी :– 25 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 10–15 टन गोबर की खाद, नाइट्रोजन–100–120, फास्फोरस–60, पोटाश–60 एव् जिंक–25 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियंत्रण :– बुवाई के 24 घंटे के अन्दर ऐट्राजिन डबल्यू.पी. 2 कि. ग्रा. का 800 लीटर पानी प्रति हे0 की दर से छिडकाव करें। या 2–3 निराई करें।

कीट एवं रोकथाम :– (1) **तना छेदक**–1.5 ली0 एन्डोसल्फान 35 ई.सी. या क्यूनालोफास 25 प्रतिशत ईसी एक लीटर को 1000 लीटर पानी के साथ मिलाकर छिडकाव करें।

(2) **सूट फ्लाई**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई के समय कूड़ में डाले।

(3) **सफेद लट**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई से पहले मिट्टी में मिला दें।

औसतन खर्च –रु. 17000/हे0 **शुद्ध लाभ** –रु. 14000 –37500/हे0

सितम्बर के दूसरे सप्ताह से दिसम्बर का दूसरा सप्ताह
तोरिया

उन्नत प्रजाति :– पी.टी.–303, पी.टी.–507 भवानी एंव् टा.–9

बीज एवं दूरी :– 5–6 कि.ग्रा./हे0

लाईन से लाईन की दूरी :– 45 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 15–20 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– गोबर की खाद 10–12 टन/हे0, नाइट्रोजन–80–120, फास्फोरस–60, पोटाश–40 एव् गन्धक–30 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियन्त्रण :–

(1) खरपतवारों को खुरपी से निराई कर नियत्रित करें।

बीमारियां एवं उपचार :–

झुलसा रोग एवं सफेद गेरूई :–

डाइथेन–एम 45 से 2 ग्राम/किलो बीज को उपचारित करें।

कीट एवं उपचार :–

एफिड :– रोगोर 30 ई.सी./एन्डोसल्फान 35 ई.सी./मैलाथियान 50 ई.सी. का 0.5 प्रतिशत घोल का छिडकाव करना चाहिए।

औसतन खर्च –रु.11500/हे0 **शुद्ध लाभ** –रु 15000–26500/हे0

जनवरी के अन्तिम सप्ताह से जून का दूसरा सप्ताह
खरबूजा

उन्नत प्रजाति :– हाईब्रिड, बायो रेड गोल्ड, रैसीका एवं कैश्टीला

बीज दर :– 7 से 8 कि.ग्रा./हे0

बुआई का तरीका :– 150 सें.मी. चौडी बैड बनाकर उनके बीच में 60 सें.मी. नाली बनाकर, बैड कर दोनों तरफ नाली के पास 90–100 सें.मी. की दूरी पर 2–3 बीज 1.5 सें.मी. गहराई में बोने चाहिए।

खाद एवं उर्वरक :– 30 टन गोबर की खाद, नाइट्रोजन–120 से 150, फास्फोरस–100 एव् पोटाश–100–120 कि.ग्रा./हे0

सिचाई :– 6–8 दिन के अन्तराल पर हल्की सिचाई करते रहना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण :– 2–3 बार निराई

कीट नियंत्रण एवं रोग :–

- बुआई के 30 दिन बाद प्रति लीटर पानी में मेटासिसटोक 2 मि.ली. का छिडकाव करें।
- बुआई के 30 दिन बाद प्रति लीटर पानी में सेविन 4 ग्राम फोलटॉफ 1.5 मि. ली. का छिड़काव करें।
- बुआई के 80 दिन बाद प्रति लीटर पानी में मोनोक्रोटोफॉस 1.5 मि.ली. केराथिन 0.5 मि.ली. का छिड़काव करें।

जड सडन – बाविस्टीन/डाइथेन – एम (0.1 प्रतिशत) का घोल बनाकर 15 दिन के अन्तराल पर 2 छिड़काव करें।

औसतन खर्च –रु.36500/हे0 **शुद्ध लाभ** – रु.49000 –110000/हे0

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोये।
3. उनन्त किस्म का बीज बोये।
4. अन्य बैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण खरपतवार एव् कीट प्रवन्ध अपनायें।
6. समय पर फसल की कटाई करें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 221 से 476 रुपये प्रति दिन/हे0

मक्का–आलू–प्याज–ढैंचा

जून के प्रथम सप्ताह से सितम्बर का प्रथम सप्ताह	अक्टूबर के तीसरे सप्ताह से फरवरी का तृतीय सप्ताह	फरवरी के अन्तिम सप्ताह से मई का दूसरा सप्ताह	मई के दूसरे सप्ताह से जून का अन्तिम सप्ताह
मक्का	**आलू**	**प्याज**	**ढैंचा**
उन्नत प्रजाति :– नवीन, कंचन, स्वेता, आजाद, सूर्या, उत्तम, पूसा अर्लीहइब्रिड, गौरव एव्, हा0 स्वीट पर्ल **बीज एवं बुआई :–** 20–25 कि0 ग्रा0/हे0 **लाईन से लाईन की दूरी :–** 60 सें.मी. **पौधे पौधे की दूरी :–** 25 सें.मी. **खाद एवं उर्वरक :–** 10–15 टन गोबर की खाद, नाइट्रोजन–100–120, फास्फोरस–60, पोटाश–60 एव् जिंक–25 कि.ग्रा./हे0 **खरपतवार नियंत्रण :–** बुवाई के 24 घंटे के अन्दर ऐट्राजिन डबल्यू.पी. 2 कि.ग्रा. का 800 लीटर पानी प्रति हे0 की दर से छिडकाव करें। या 2–3 निराई करें। **कीट एवं रोकथाम :–** (1) **तना छेदक**–1.5 ली0 एन्डोसल्फान 35 ई.सी. या क्यूनालोफास 25 प्रतिशत ईसी एक लीटर को 1000 लीटर पानी के साथ मिलाकर छिडकाव करें। (2) **सूट फ्लाई**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई के समय कूड़ में डाले। (3) **सफेद लट**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई से पहले मिट्टी में मिला दें।	**उन्नत प्रजातियाँ :–** कु0 बहार, कु0 सदाबहार, कु0 चिपसोना–1, कु0 बादशाह, कु0 चन्द्रमुखी एव् कु0 चिपसोना–2 **बीज की मात्रा :–** 20–25 कु0 **लाईन से लाईन से दूरी :–** 50–60 सें.मी. **पौधे से पौधे की दूरी :–** 20–25 सें.मी. **खाद एवं उर्वरक :–** 20–25 टन गोबर की खाद, नाईटोजन–180, फास्फोरस– 120 एव् पोटाश–150 कि.ग्रा./हे0 **पौधों पर मिट्टी चढाना :–** जब पौधे 15–20 सें.मी. के हो जाये। **कीट नियत्रण :–** कार्बोफयूरान 3 जी की 30 कि.ग्रा./हे0 बुआई के समय डालें। **बीमारियाँ :–** **1. पछेती एव् अगेती झुलसा :–** (i) रोग प्रतिरोधक प्रजातियाँ उगाये (ii) मेटालेक्सिल युक्त रसायन 2 कि.ग्रा./हे0 की दर से छिडकाव करें। **2. मोजेक–** रोगोर–30 ई0सी0 की 600–700 मी0 ली0 मात्रा 500–600 ली0/हे0 पानी में घोलकर छिडकाव करें।	**उन्नत प्रजाति :–** नासिक रेड, एन 53, पूसा रेड, पूसा रत्नार एव् एफडीआर **नर्सरी बुआई का समय :–** 15 अक्टुबर से 15 नवम्बर **बीज की दर :–** 10 से 12 कि.ग्रा./हे0 **लाईन से लाईन :–** 30 सें.मी. **पौधे से पौधे की दूरी :–** 10–15 सें.मी. **खाद व उर्वरक :–** 20–30 टन गोबर की खाद, नाइट्रोजन–80–100, फास्फोरस–50 एवं् पोटाश–100 कि.ग्रा./हे0 **सिंचाई :–** 10–15 दिन के अन्तराल पर सिचाई करते रहना चाहिए। **खरपतवार एवं निराई :–** **गुडाई नियंत्रण :–** 2–3 निराई–गुडाई	**उन्नत प्रजाति :–** सेस पी0डी0सी0एस0आर0–1, सेस पन्त–1, सेस.एच–1, सेस एन0बी0पी0जी0आर0–1 **बीज दर :–** 80–100 कि.ग्रा./हे0 **बुआई का तरीका :–** **लाईन से लाईन की दूरी :–** 30 सें.मी. **पौधे से पौधे की दूरी :–** 15–20 सें.मी. **खाद एवं उर्वरक :–** नाइट्रोजन–40, फास्फोरस–60 एव् पोटाश–40 कि.ग्रा./हे0 **सिचाई :–** 5–7 **खरपतवार नियंत्रण :–** एक बार निराई
औ. खर्च –रु. 17000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 14000 –37500/हे0	**औ. खर्च** –रु.52000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु.45000–87000/हे0	**औ. खर्च** –रु.30000/हे0 **शुद्व लाभ** – रु.39000–81500/हे0	**औ. खर्च** –रु. 4500/हे0 **लाभ**– भूमि की दशा में सुधार एवं उर्वरकों की बचत

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोये।
3. उन्नत किस्म का बीज बोये।
4. अन्य बैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण खरपतवार एव् कीट प्रवन्ध अपनाये।
6. समय पर फसल की कटाई करें तथा समय से ढैंचे की फसल को भूमि में मिलायें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 268 से 563 रुपये प्रति दिन/हे0

धान–लहसुन–ढैंचा

जून के दूसरे सप्ताह से सितम्बर का अन्तिम सप्ताह
धान

उन्नत प्रजातियाँ :– साकेत–1, साकेत–4, नेरेन्द्र–1, पी.आर.एच.–10 एव् हाईब्रिड–986
रोपाई :– नर्सरी डालने के 22–25 दिन बाद 2–3 पौधे/हिल
लाईन से लाईन की दूरी :– 20 सें.मी.
पौधे से पौधे की दूरी :– 10 सें.मी.
खाद एवं उर्वरक :– नाईटोजन–100, फास्फोरस–60 एव् पोटाश–40 कि.ग्रा./हे0
खरपतवार नियत्रंण :–
(i) रोपाई 48 घंटे के अन्दर ब्यूटाक्लोर 1.5 लीटर को 800 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे या बालू में मिला कर प्रयोग करें या आलमिक्स 20 कि.ग्रा./हे0 फसल में डालें।
कीट नियंत्रण :–
फुदके, मिलीवग, गन्दी कीट एवं सूडी की रोकथाम के लिये मैलाथियान 50 प्रतिशत 1.5 ली0/हे0 800 ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें।
बीमारियाँ
1. थाईरम, कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से 2.5 ग्राम/कि.ग्रा. बीज को उपचारित करके बोये।
2. **खैरा रोग:–** जिंक सल्फेट 5 कि.ग्रा. को 20 किलो यूरिया तथा 2.5 कि.ग्रा. बुझा हुआ चुने को 500 ली0 पानी में मिलाकर प्रति हे0 में रोपाई के 15–20 दिन के अन्दर छिडकाव करें।

औसतन खर्च –रु. 24500/हे0 **शुद्व लाभ** –रु.15000–37500/हे0

अक्टूबर के प्रथम सप्ताह से अप्रैल का दूसरा सप्ताह
लहसुन

उन्नत प्रजाति :– जी 282, यमुना सफेद 3, जी–50 एवं जी 41
बीज दर :– 400–600 कि.ग्रा./हे0
बुआई की विधि :–
लाईन से लाईन से दूरी :– 20 सें.मी.
पौधे से पौधे की दूरी :– 10 सें.मी.
खाद एवं उर्वरक :– 20–30 टन गोबर की खाद, नाइट्रोजन–150, फास्फोरस–60, पोटाश–80–100 एव् गधंक–40–60 कि.ग्रा./हे0
खरपतवार नियंत्रण :–
दो निराई खुरपी या हैण्ड हो से खरपतवार नियंत्रण के लिये काफी होती है।
सिंचाई :–
पहली सिचाई बोने के तुरन्त बाद करना चाहिए इसके बाद 10–15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए।
खुदाई :–
जब पत्तियां पीली या ब्राउन रंग की होने लगे तो लहसुन की खुदाई कर लेनी चाहिए।

औसतन खर्च –रु.42000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 80000 –160000/हे0

मई के दूसरे सप्ताह से जून का अन्तिम सप्ताह
ढैंचा

उन्नत प्रजाति :– सेस पी0डी0सी0एस0आर0–1, सेस पन्त–1, सेस.एच–1, सेस एन0बी0पी0जी0आर0–1
बीज दर :– 80–100 कि.ग्रा./हे0
बुआई का तरीका :–
लाईन से लाईन की दूरी :– 30 सें.मी.
पौधे से पौधे की दूरी :– 15–20 सें.मी.
खाद एवं उर्वरक :– नाइट्रोजन–40, फास्फोरस–60 एव् पोटाश–40 कि.ग्रा./हे0
सिचाई :– 5–7
खरपतवार नियंत्रण :– एक बार निराई

औ. खर्च –रु. 4500/हे0 **लाभ**– भूमि की दशा में सुधार एवं उर्वरकों की बचत

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोये।
3. उन्नत किस्म का बीज बोये।
4. अन्य बैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण खरपतवार एव् कीट प्रवन्ध अपनायें।
6. समय पर फसल की कटाई करें तब समय से मूँग की फसल को भूमि में मिलायें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 260 से 564 रुपये प्रति दिन/हे0

मक्का–सरसों–गन्ना

(द्विवर्षीय फसल प्रणाली)

जून के प्रथम सप्ताह से सितम्बर का प्रथम सप्ताह

मक्का

उन्नत प्रजाति :– नवीन, कंचन, स्वेता, आजाद, सूर्या, उत्तम, पूसा अर्लीहइब्रिड, गौरव एव्, हा0 स्वीट पर्ल

बीज एवं बुआई :– 20–25 कि0 ग्रा0/हे0

लाईन से लाईन की दूरी :– 60 सें.मी.

पौधे पौधे की दूरी :– 25 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 10–15 टन गोबर की खाद, नाइट्रोजन–100–120, फास्फोरस–60, पोटाश–60 एव् जिंक–25 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियंत्रण :– बुवाई के 24 घंटे के अन्दर ऐट्राजिन डबल्यू.पी. 2 कि.ग्रा. का 800 लीटर पानी प्रति हे0 की दर से छिडकाव करें। या 2–3 निराई करें।

कीट एवं रोकथाम :– (1) **तना छेदक**–1.5 ली0 एन्ड्रोसल्फान 35 ई.सी. या क्यूनालोफास 25 प्रतिशत ई.सी. एक लीटर को 1000 लीटर पानी के साथ मिलाकर छिडकाव करें।

(2) **सूट फ्लाई**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई के समय कूड़ में डाले।

(3) **सफेद लट**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई से पहले मिट्टी में मिला दें।

औसतन खर्च –रु. 16000/हे0 **शुद्ध लाभ** –रु. 14000 –37500/हे0

अक्टूबर के दूसरे सप्ताह से फरवरी का अन्तिम सप्ताह

सरसों

उन्नत प्रजाति :– पूसा बोल्ड, क्रान्ति, रोहणी, वरुणा, वरदान एव् उर्वसी

लाईन से लाईन की दूरी :– 45–60 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 15–20 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– गोबर की खाद 10–12 टन/हे0, नाइट्रोजन–80–120, फास्फोरस–60, पोटाश–40 एव् गन्धक–30 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियन्त्रण :–

खरपतवारों को खुरपी से निराई कर नियत्रित करें।

बीमारियाँ एवं उपचार :–

1. झुलसा रोग एवं सफेद गेरूई :– डाइथेन–एम 45 (2 ग्राम/किलो) से बीज को उपचारित करें।

कीट एवं उपचार :–

एफिड– रोगोर 30 ई.सी./एन्ड्रोसल्फान 35 ई.सी/मैलाथियान 50 ई.सी. का 0.5 प्रतिशत घोल का छिड़काव करना चाहिए।

औसतन खर्च –रु. 13500/हे0 **शुद्ध लाभ** –रु. 22000–39000/हे0

मार्च से प्रथम सप्ताह से अप्रैल का अन्तिम सप्ताह

गन्ना

उन्नत प्रजाति :– शीघ्र पकने वाली – को.शा. 8436, को.शा. 88230, को.शा. 9525, को.जे. 64 एवं को.शा. 96268; **मध्यम एवं देरी से पकने वाली** – को. शा. 767, 8432, 88216, 97264, को.से. 92423, को.शा. 96275 एवं को.शा. 97261, को.से. 95422, को.शा. 99259, यू.पी. 0097, को.शा. 92263, 91230, 94257, 96269, यू.पी. 39 एवं को. पन्त 84212

पंक्ति से पंक्ति की दूरी :– 60 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– प्रति 20 सें.मी. की दूरी में दो आंख का एक पैड़ा डालना चाहिए।

खाद की मात्रा :– नत्रजन–150–180, फास्फोरस–60–80, पोटाश–60, जिंक सल्फेट 25 एव् गंधक 35 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियंत्रण :– बुवाई के 24 घंटे अन्दर ऐट्राजिन का छिड़काव करें। डबलू पी 2 किलोग्राम 800 लीटर पानी में प्रति हे0 छिड़काव करें। 2–3 निराइ करें।

कीट एवं रोग नियंत्रण :–

बीज उपचार :– पारायुक्त रसायन जैसे एरीटान 6 प्रतिशत या एगलाल 3 प्रतिशत की क्रमशः 280 ग्राम या 560 ग्राम मात्रा प्रति हेक्टेयर को 150 लीटर पानी में घोल बनाकर गन्ने के पेड़ों को डुबोकर उपचारित करना चाहिए।

दीमक आंकुर बेधक चोटी बेधक, तना बेधक एवं पायरिला – क्लोरपाइरीफास 20 प्रतिशत घोल 5.0 लीटर/हेक्टेअर की दर से 1500 लीटर पानी में घोल कर अथवा फोरेट 10 जी. या लिण्डेन 6 प्रतिशत 20 का कि.ग्रा./हे0 का प्रयोग पेड़ों के ऊपर ढ़लाई करनी चाहिए।

औसतन खर्च –रु. 53500/हे0 **शुद्ध लाभ** – रु. 62000–114000/हे0

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोये।
3. उन्नत किस्म का बीज बोयें।
4. अन्य बैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण खरपतवार एव् कीट प्रवन्ध अपनाये।
6. समय पर फसल की कटाई करें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 134 से 260 रुपये प्रति दिन/हे0

गन्ने की पेड़ी–गेहूँ

मार्च के प्रथम सप्ताह से दिसम्बर का प्रथम सप्ताह
गन्ने की पेड़ी

उन्नत प्रजाति :–

शीघ्र पकने वाली :– को.शा. 8436, को.शा. 88230, को.शा. 9525, को.जे. 64 एवं को.शा. 96268

मध्यम एवं देरी से पकने वाली :– को.शा. 767, 8432, 88216, 97264, को.से. 92423, को.शा. 96275 एवं को.शा. 97261, को.से. 95422, को.शा. 99259, यू.पी. 0097, को.शा. 92263, 91230, 94257, 96269, यू.पी. 39 एवं को. पन्त 84212

पेड़ी प्रवन्धन :–

मार्च तक भूमि की सतह से बावक फसल की कटाई करना, ठूठों की तेज धार वाले औजार से छंटाई करें, सूखी पत्तियां समान रूप से बिछानी, सिंचाई कर मेड़ें गिराना तथा देशी हल या कल्टीवेटर से गुड़ाई करनी चाहिए।

खाद की मात्रा :–

180 कि0ग्रा0 नत्रजन प्रति हेक्टेअर की आधी मात्रा बावक की कटाई उपरान्त सिंचाई के बाद तथा शेष नत्रजन ब्यांत आरम्भ होने पर लाइनों में देना चाहिए। मई–जून में 5 प्रतिशत यूरिया के घोल में 670 मिली0/हे0 इण्डोसल्फान कीटनाशक मिलाकर दो बार छिड़काव करना लाभप्रद है।

औसतन खर्च –रु. 28500/हे0 **शुद्व लाभ** –रु.97000 – 139500/हे0

दिसम्बर के दूसरे सप्ताह से अप्रैल का अन्तिम सप्ताह
गेहूँ

उन्नत प्रजाति :– पी.बी.डब्लू–343, पी.बी.डब्लू–226, पी.बी.डब्लू–373, पी.बी.डब्लू–502, एच डी 2285, राज 3765, एच डी 2307, एच डी 2402 एवं डी वी डब्लू–16

बीज दर व दूरी :– 100–120 कि0 ग्रा0/हे0

पंक्तियो की दूरी :– 15–20 सें.मी.

खाद व उर्वरक :– गोबर की खाद 10–15 टन/हे0, नाईट्रोजन–120, फास्फोरस–80 एवं पोटाश–60 कि0 ग्रा0/हे0

खरपतवार नियन्त्रण :–

चौडी एवं सकरी पत्ती वाले खरपतवार–टोटल – (सल्फासल्फुरान + मैट सल्फुरान 75 + 5% w/w) 1.25 ली0 प्रति हे0 का छिंडकाव बुवाई से 30–35 दिन में करें। ध्यान रहे कि मौसम साफ हो।

औसतन खर्च –रु 21000/हे0 **शुद्व लाभ** – रु 22500–42000/हे0

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोयें।
3. उन्नत किस्म का बीज बोयें।
4. अन्य बैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण खरपतवार एव् कीट प्रवन्ध अपनायें।
6. समय पर फसल की कटाई करें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 327 से 497 रुपये प्रति दिन/हे0

मक्का–आलू–गन्ना

(द्विवर्षीय फसल प्रणाली)

जून के दूसरे सप्ताह से सितम्बर का दूसरा सप्ताह

मक्का

उन्नत प्रजाति :– नवीन, कंचन, स्वेता, आजाद, सूर्या, उत्तम, पूसा अर्लीहइब्रिड, गौरव एव्, हा0 स्वीट पर्ल

बीज की मात्रा :– 20–25 कि0 ग्रा0/हे0

लाईन से लाईन की दूरी :– 60 सें.मी.

पौधे पौधे की दूरी :– 25 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 10–15 टन गोबर की खाद, नाइट्रोजन–100–120, फास्फोरस–60, पोटाश–60 एव् जिंक–25 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियंत्रण :– बुवाई के 24 घंटे के अन्दर ऐट्राजिन डबल्यू.पी. 2 कि.ग्रा. का 800 लीटर पानी प्रति हे0 की दर से छिडकाव करें। या 2–3 निराई करें।

कीट एवं रोकथाम :– (1) **तना छेदक**–1.5 ली0 एन्ड्रोसल्फान 35 ई.सी. या क्यूनालोफास 25 प्रतिशत ई.सी. एक लीटर को 1000 लीटर पानी के साथ मिलाकर छिडकाव करें।

(2) **सूट फ्लाई**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई के समय कूड़ में डाले।

(3) **सफेद लट**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई से पहले मिट्टी में मिला दें।

औसतन खर्च –रु. 16000/हे0 **शुद्ध लाभ** –रु. 14000 –37500/हे0

अक्टूबर के तीसरे सप्ताह से फरवरी का अंतिम सप्ताह

आलू

उन्नत प्रजातियाँ :– कु0 बहार, कु0 सदाबहार, कु0 चिपसोना–1, कु0 बादशाह, कु0 चन्द्रमुखी एव् कु0 चिपसोना–2

बीज की मात्रा :– 20–25 कु0

लाईन से लाईन से दूरी :– 50–60 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 20–25 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 20–25 टन गोबर की खाद, नाईटोजन–180, फास्फोरस–120 एव् पोटाश–150 कि.ग्रा./हे0

पौधों पर मिट्टी चढाना :– जब पौधे 15–20 सें.मी. के हो जाये।

कीट नियत्रण :– कार्बोफयूरान 3 जी की 30 कि.ग्रा./हे0 बुआई के समय डालें।

बीमारियाँ :–

1. पछेती एव् अगेती झुलसा :–

(i) रोग प्रतिरोधक प्रजातियाँ उगाये

(ii) मेटालेक्सिल युक्त रसायन 2 कि.ग्रा./हे0 की दर से छिड़काव करें।

2. मोजेक– रोगोर–30 ई0सी0 की 600–700 मी0 ली0 मात्रा 500–600 ली0/हे0 पानी में घोलकर छिड़काव करें।

औसतन खर्च –रु.52000/हे0 **शुद्ध लाभ** –रु.45000–87000/हे0

मार्च से प्रथम सप्ताह से अप्रैल का अन्तिम सप्ताह

गन्ना

उन्नत प्रजाति :– शीघ्र पकने वाली – को.शा. 8436, को.शा. 88230, को.शा. 9525, को.जे. 64 एवं को.शा. 96268; **मध्यम एवं देरी से पकने वाली** – को. शा. 767, 8432, 88216, 97264, को.से. 92423, को.शा. 96275 एवं को.शा. 97261, को.से. 95422, को.शा. 99259, यू.पी. 0097, को.शा. 92263, 91230, 94257, 96269, यू.पी. 39 एवं को. पन्त 84212

पंक्ति से पंक्ति की दूरी :– 60 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– प्रति 20 सें.मी. की दूरी में दो आंख का एक पैड़ा डालना चाहिए।

खाद की मात्रा :– नत्रजन–150–180, फास्फोरस–60–80, पोटाश–60, जिंक सल्फेट 25 एव् गंधक 35 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियंत्रण :– बुवाई के 24 घंटे अन्दर ऐट्राजिन का छिड़काव करें। डबलू पी 2 किलोग्राम 800 लीटर पानी में प्रति हे0 छिड़काव करें। 2–3 निराइ करें।

कीट एवं रोग नियंत्रण :–

बीज उपचार :– पारायुक्त रसायन जैसे एरीटान 6 प्रतिशत या एगलाल 3 प्रतिशत की क्रमशः 280 ग्राम या 560 ग्राम मात्रा प्रति हेक्टेयर को 150 लीटर पानी में घोल बनाकर गन्ने के पेड़ों को डुबोकर उपचारित करना चाहिए।

दीमक आंकुर बेधक चोटी बेधक, तना बेधक एवं पायरिला – क्लोरपाइरीफास 20 प्रतिशत घोल 5.0 लीटर/हेक्टेअर की दर से 1500 लीटर पानी में घोल कर अथवा फोरेट 10 जी. या लिण्डेन 6 प्रतिशत 20 का कि.ग्रा./हे0 का प्रयोग पेड़ों के ऊपर ढ़लाई करनी चाहिए।

औसतन खर्च –रु. 53500/हे0 **शुद्ध लाभ** – रु. 62000–114000/हे0

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोये।
3. उन्नत किस्म का बीज बोये।
4. अन्य वैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण खरपतवार एव् कीट प्रवन्ध अपनाये।
6. समय पर फसल की कटाई करें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 165 से 326 रुपये प्रति दिन/हे0

धान–चना–ढैंचा

जून के दूसरे सप्ताह से सितम्बर का अन्तिम सप्ताह
धान

उन्नत प्रजातियाँ :– साकेत–1, साकेत–4, नेरेन्द्र–1, पी.आर.एच.–10 एव् हाईब्रिड–986

रोपाई :– नर्सरी डालने के 22–25 दिन बाद 2–3 पौधे/हिल

लाईन से लाईन की दूरी :– 20 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 10 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– नाईटोजन–100, फास्फोरस–60 एव् पोटाश–40 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियत्रंण :–

(i) रोपाई 48 घंटे के अन्दर ब्यूटाक्लोर 1.5 लीटर को 800 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे या बालू में मिला कर प्रयोग करें या आलमिक्स 20 कि.ग्रा./हे0 फसल में डालें

कीट नियंत्रण :–

फुदके, मिलीवग, गन्दी कीट एवं सूडी की रोकथाम के लिये मैलाथियान 50 प्रतिशत 1.5 ली0/हे0 800 ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें

बीमारियाँ

1. थाईरम, कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से 2.5 ग्राम/कि.ग्रा. बीज को उपचारित करके बोये।
2. **खैरा रोग:–** जिंक सल्फेट 5 कि.ग्रा. को 20 किलो यूरिया तथा 2.5 कि.ग्रा. बुझा हुआ चुने को 500 ली0 पानी में मिलाकर प्रति हे0 में रोपाई के 15–20 दिन के अन्दर छिड़काव करें।

औसतन खर्च –रु. 24500/हे0 **शुद्व लाभ** –रु.15000–37500/हे0

अक्टूबर के दूसरे सप्ताह से अप्रैल का अन्तिम सप्ताह
चना

उन्नत प्रजाति :– अवरोधी, सूर्या, सदभावना, पूसा–256, बी.जी.–372, पूसा–267, पूसा चमत्कार एवं एल–550

बीज दर :– 80–100 कि.ग्रा./हे0

लाईन से लाईन की दूरी :– 30–45 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– गोबर की सड़ी खाद 10–15 टन/हे0, नाईट्रोजन– 20, फास्फोरस– 60 एवं पोटाश– 40 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियंत्रण :– खुरपी से दो निराई

बीमारियां :–

(i) उकठा एवं झुलसा रोग– थिरम (20 ग्राम) + कार्बेडन्डाजिम (10 ग्राम) + एक पैकिट राइजोवियम कल्चर प्रति 10 कि.ग्राम बीज को उपचारित करके बुआई करें।

(ii) कीट चना फली छेदक – मोनोक्रोटोफास 35 ईसी 1 मिली को 1 ली0 पानी के साथ मिलाकर छिड़काव करें।

औसतन खर्च –रु. 11000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 31000–42000/हे0

मई के दूसरे सप्ताह से जून का अन्तिम सप्ताह
ढैंचा

उन्नत प्रजाति :– सेस पी0डी0सी0एस0आर0–1, सेस पन्त–1, सेस.एच–1, सेस एन0बी0पी0जी0आर0–1

बीज दर :– 80–100 कि.ग्रा./हे0

बुआई का तरीका :–

लाईन से लाईन की दूरी :– 30 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 15–20 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– नाइट्रोजन–40, फास्फोरस–60 एव् पोटाश–40 कि.ग्रा./हे0

सिचाई :– 5–7

खरपतवार नियंत्रण :– एक बार निराई

औसतन खर्च –रु. 4500/हे0 **लाभ–** भूमि की दशा में सुधार एवं उर्वरकों की बचत

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोये।
3. उन्नत किस्म का बीज बोये।
4. अन्य वैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समन्वित पोषण खरपतवार एव् कीट प्रवन्ध अपनाये।
6. समय पर फसल की कटाई करें तथा समय से ढैंचे की फसल को भूमि में मिलायें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 126 से 217 रुपये प्रति दिन/हे0

मक्का–चना–ढैंचा

जून के दूसरे सप्ताह से सितम्बर का दूसरे सप्ताह
मक्का

उन्नत प्रजाति :– नवीन, कंचन, स्वेता, आजाद, सूर्या, उत्तम, पूसा अर्लीहइब्रिड, गौरव एव्, हा0 स्वीट पर्ल

बीज एवं बुआई :– 20–25 कि0 ग्रा0/हे0

लाईन से लाईन की दूरी :– 60 सें.मी.

पौधे पौधे की दूरी :– 25 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 10–15 टन गोबर की खाद, नाइट्रोजन–100–120, फास्फोरस–60, पोटाश–60 एव् जिंक–25 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियंत्रण :– बुवाई के 24 घंटे के अन्दर ऐट्राजिन डबल्यू.पी. 2 कि. ग्रा. का 800 लीटर पानी प्रति हे0 की दर से छिडकाव करें। या 2–3 निराई करें।

कीट एवं रोकथाम :– (1) **तना छेदक**–1.5 ली0 एन्ड्रोसल्फान 35 ई.सी. या क्यूनालोफास 25 प्रतिशत ई.सी. एक लीटर को 1000 लीटर पानी के साथ मिलाकर छिडकाव करें।

(2) **सूट फ्लाई**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई के समय कूड़ में डाले।

(3) **सफेद लट**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई से पहले मिट्टी में मिला दें।

औसतन खर्च –रु. 16000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 14000 –37500/हे0

अक्टूबर के दूसरे सप्ताह से अप्रैल का अन्तिम सप्ताह
चना

उन्नत प्रजाति :– अवरोधी, सूर्या, सदभावना, पूसा–256, बी.जी.–372, पूसा–267, पूसा चमत्कार एवं एल–550

बीज दर :– 80–100 कि.ग्रा./हे0

लाईन से लाईन की दूरी :– 30–45 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– गोबर की सड़ी खाद 10–15 टन/हे0, नाईट्रोजन– 20, फास्फोरस– 60 एवं पोटाश– 40 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियंत्रण :– खुरपी से दो निराई

बीमारियां :–

(i) उकठा एवं झुलसा रोग– थिरम (20 ग्राम) + कार्बेडन्डाजिम (10 ग्राम) + एक पैकिट राइजोवियम कल्चर प्रति 10 कि.ग्रा. बीज को उपचारित करके बुआई करें।

(ii) कीट चना फली छेदक – मोनोक्रोटोफास 35 ई.सी. 1 मिली को 1 ली0 पानी के साथ मिलाकर छिडकाव करें।

औसतन खर्च –रु. 11000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 31000–42000/हे0

मई के दूसरे सप्ताह से जून का अन्तिम सप्ताह
ढैचा

उन्नत प्रजाति :– सेस पी0डी0सी0एस0आर0–1, सेस पन्त–1, सेस.एच–1, सेस एन0बी0पी0जी0आर0–1

बीज दर :– 80–100 कि.ग्रा./हे0

बुआई का तरीका :–

लाईन से लाईन की दूरी :– 30 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 15–20 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– नाइट्रोजन–40, फास्फोरस–60 एव् पोटाश–40 कि.ग्रा./हे0

सिचाई :– 5–7

खरपतवार नियंत्रण :– एक बार निराई

औसतन खर्च –रु. 4500/हे0 **लाभ**– भूमि की दशा में सुधार एवं उर्वरकों की बचत

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोये।
3. उन्नत किस्म का बीज बोये।
4. अन्य वैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण खरपतवार एव् कीट प्रवन्ध अपनाये।
6. समय पर फसल की कटाई करें तथा समय से ढैंचे की फसल को भूमि में मिलायें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 123 से 218 रुपये प्रति दिन/हे0

अरहर–गेहूँ–ढैंचा

जून के प्रथम सप्ताह से नवम्बर का अन्तिम सप्ताह
अरहर

उन्नत प्रजाति :– टाइप– 21, यू.पी.ए.एस.–120, मनक, पारस ए एव् आई.पी. सी.एल.–88039
बीज एवं बुआई :– 15–20 कि.ग्रा./हे0
लाईन से लाईन की दूरी :– 60–75 सें.मी.
पौधे से पौधे की दूरी :– 15–20 सें.मी.
खाद व उर्वरक :– गोबर की खाद 10–15 टन/हे0, नाइट्रोजन–20–30, फास्फोरस–40–60, पोटाश–40, गन्धक–30 कि.ग्रा./हे0
खरपतवार नियंत्रण–
1. बुवाई के तुरन्त बाद/24 घन्टे के अन्दर 3 कि.ग्रा./हे0 लासो नामक खरपतवारनाशी को 1000 ली0 पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
2. प्रथम निराई 25–30 दिन बाद द्वितीय निराई 60 दिन बाद
कीट एवं रोग नियंत्रण :–
1. फली बेधक एवं लीफ रोलर कीट :– थायोडान/एन्डोसल्फान 35 ई.सी 1.5 लीटर को 700 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर दो छिडकाव 15 दिन के अन्तर पर करें।
2. उकठा एव्म तना सडन: :–
1. थिरम (20 ग्राम) + कार्बेडन्डाजिम (10 ग्राम) + एक पैकिट राइजोवियम कल्चर प्रति 10 कि0 ग्राम बीज को उपचारित करके बुआई करें।
2. 3–4 साल तक दुबारा खेत में अरहर न बोई जाय जिसमें यह रोग लग चुका हो

औसतन खर्च –रु. 11500/हे0 **शुद्ध लाभ** –रु. 27500–515000/हे0

दिसम्बर से दूसरे सप्ताह से अप्रैल का अन्तिम सप्ताह
गेहूँ

उन्नत प्रजाति :– पी.बी.डब्लू.–226, पी.बी.डब्लू.–373, एच. डी. 2285, राज 3765, एच.डी. 2307, एच.डी. 2402 एव् डी.वी. डब्लू.–16
बीज दर व दूरी :– 100–120 कि.ग्रा./हे0
पंक्तियो की दूरी :– 15–20 से.मी.
खाद व उर्वरक :– गोबर की खाद 10–15 टन/हे0, नाईट्रोजन–120, फास्फोरस–80, पोटाश–60 एव् गधंक–30 कि.ग्रा./हे0
खरपतवार नियन्त्रण–
1. चौडी पत्ती वाले– 2–4–डी (सोडियम साल्ट) 80 प्रतिशत डब्लु. पी की 6. 25 ग्राम मात्रा 500–600 ली0 पानी के साथ मिलाकर बुआई के 30–35 दिन बाद छिडकाव करें।
2. संकरी पत्ती वाले– आइसोप्रोटूयूरान 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. की 1500 ग्रा मात्रा 500–600 लीटर पानी में मिलाकर बुआई के 30–35 दिन बाद छिड़काव करना चाहिए।
3. चौडी एवं सकरी पत्ती वाले खरपतवार– टोटल – (सल्फासल्फुरान + मैट सल्फुरान 75 + 5% w/w) 1.25 ली0 प्रति हे0 का छिंडकाव बुवाई से 30–35 दिन में करें। ध्यान रहे कि मौसम साफ हो।

औसतन खर्च –रु.21500/हे0 **शुद्ध लाभ** – रु.22500–39000/हे0

मई के दूसरे सप्ताह से जून का अन्तिम सप्ताह
ढैंचा

उन्नत प्रजाति :– सेस पी0डी0सी0एस0आर0–1, सेस पन्त–1, सेस.एच–1, सेस. एन0बी0पी0जी0आर0–1
बीज दर :– 80–100 कि.ग्रा./हे0
बुआई का तरीका :–
लाईन से लाईन की दूरी :– 30 सें.मी.
पौधे से पौधे की दूरी :– 15–20 सें.मी.
खाद एवं उर्वरक :– नाइट्रोजन–40, फास्फोरस–60 एव् पोटाश–40 कि.ग्रा./हे0
सिचाई :– 5–7
खरपतवार नियंत्रण :– एक बार निराई

औसतन खर्च–रु. 4500/हे0 **लाभ**– भूमि की दशा में सुधार एवं उर्वरकों की बचत

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोयें।
3. उन्नत किस्म का बीज बोयें।
4. अन्य बैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समन्वित पोषण खरपतवार एव् कीट प्रवन्ध अपनायें।
6. ज्वार, अरहर मिश्रित बोने से भी रोग कम लगता है तथा फसलचक्र अपनाए।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 136 से 247 रुपये प्रति दिन/हे0

ज्वार (हरा चारा)–उर्द–गेहूँ

मई के दूसरे सप्ताह से जुलाई का दूसरा सप्ताह
ज्वार (हरा चारा)

उन्नत किस्म :– मीठी ज्वार (रियो), पी.सी–6, पी.सी–9, यू.पी. चरी 1, पन्त चरी–3, एच.सी.–308, हरियाना चरी–1711 एव् मउ टाइप –2

बुवाई का समय :– ज्वार की बुवाई समय सें कर देनी चाहिए। वर्षा न होने की दशा में बुवाई पलेवा करके करना चाहिए

बीज की दर :– 30–40 कि.ग्रा./हे0

बुवाई की विधि :–

लाइन से लाइन :– 30 से. मी.

खाद एवं उर्वरक :– 10 से 15 टन गोबर की खाद प्रति हे, नाईट्रोजन–80 से 100, फास्फोरस–60, पोटाश–40 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियंत्रण :– एक निराई करके खरपतवारों को खेत से बाहर डालें।

चारे हेतु विशैले पदार्थ का निदान :– एच.सी.एन.नामक विशैला पैदार्थ फसल की 30 से 40 दिन की अवस्था तक अधिकतम मात्रा में होता है इसलिए चारे के लिए ज्वार को 40 दिन बाद कटाई करें।

औसतन खर्च –रु. 7000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 20000– 35000/हे0

जुलाई के अन्तिम सप्ताह से अक्टूबर का अन्तिम सप्ताह
उर्द

उन्नत प्रजाति :– आजाद 1, नरेन्द्र यू 1, पन्त यू 19, आई पी यू 94–1 एंव् पन्त यू 30

बीज की मात्रा :– बीज 20–25 कि.ग्रा./हे0

लाईन से लाईन से दूरी :– 45 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 15 से 20 टन गोबर की खाद, नत्रजन–20, फास्फोरस–60, पोटाश–40 एव् सल्फर–35 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियत्रण :–

1. प्रथम निराई 20–25 दिन
2. दूसरी निराई–40–45 दिन

बीमारियाँ :–

1. **पीला मोजेक–** मैटासिस्टोक्स/मैलाथिओन (0.1 प्रतिशत) का छिडकाव करे।
2. **लीफ कर्ल–** मैटासिस्टोक्स (0.1 प्रतिशत) का छिडकाव करना चाहिए।

कीट नियत्रण :–

1. **हैयरी कैटरपीलर–** एन्डोसल्फान 30 ई.सी. 1.5 ली0 का 1000 ली0 पानी में मिलाकर छिडकाव करें।
2. **लीफ होपर–** मोनाक्रोटोफोस 40 ई.सी./ एन्डोसल्फान 30 ई.सी. 1.5 ली0 का छिडकाव करें ।

औसतन खर्च –रु. 9500/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 21500–35000/हे0

नवम्बर का दूसरा सप्ताह से अप्रैल का अन्तिम सप्ताह
गेहूँ

उन्नत प्रजाति :– पी.बी.डब्लू–343, पी.बी.डब्लू–373, पी.बी.डब्लू–502, एच डी 2285, राज 3765, एच डी 2733, एच डी 2307, एच डी 2402 एव् डी वी डब्लू 17

बीज दर व दूरी :– 100–120 कि.ग्रा./हे0

पंक्तियो की दूरी :– 15–20 से.मी.

खाद व उर्वरक :– गोबर की खाद 10–15 टन/हे, नाईट्रोजन–120, फास्फोरस–80 एव् पोटाश–60 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियन्त्रण :–

चौडी एवं सकरी पत्ती वाले खरपतवार– टोटल – (सल्फासल्फुरान + मैट सल्फुरान 75 + 5% w/w) 1.25 ली0 प्रति हे0 का छिंडकाव बुवाई से 30–35 दिन में करें। ध्यान रहे कि मौसम साफ हो।

औसतन खर्च –रु. 17500/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 35500–46500/हे0

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोयें।
3. उन्नत किस्म का बीज बोयें।
4. उर्द की फसल में गधक का प्रयोग अवश्य करें।
5. समिन्वित पोषण एव् कीट प्रवन्ध अपनायें।
6. ज्वार की फसल में फलीदार फसलें जैसे लोबिया के साथ 2:1 के अनुपात में बोयें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 217 से 319 रुपये प्रति दिन/हे0

मक्का–लहसुन–ढैंचा

जून के दूसरे सप्ताह से दूसरा का अन्तिम सप्ताह
मक्का

उन्नत प्रजाति :– नवीन, कंचन, स्वेता, आजाद, सूर्या, उत्तम, पूसा अर्लीहइब्रिड, गौरव एव्, हा0 स्वीट पर्ल

बीज एवं बुआई :– 20–25 कि0 ग्रा0/हे0

लाईन से लाईन की दूरी :– 60 सें.मी.

पौधे पौधे की दूरी :– 25 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 10–15 टन गोबर की खाद, नाइट्रोजन–100–120, फास्फोरस–60, पोटाश–60 एव् जिंक–25 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियंत्रण :– बुवाई के 24 घंटे के अन्दर ऐट्राजिन डबल्यू.पी. 2 कि.ग्रा. का 800 लीटर पानी प्रति हे0 की दर से छिडकाव करें। या 2–3 निराई करें।

कीट एवं रोकथाम :– (1) **तना छेदक**–1.5 ली0 एन्डोसल्फान 35 ई.सी. या क्यूनालोफास 25 प्रतिशत ई.सी. एक लीटर को 1000 लीटर पानी के साथ मिलाकर छिडकाव करें।

(2) **सूट फ्लाई**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई के समय कूड़ में डाले।

(3) **सफेद लट**–फोरेट 10 प्रतिशत दाना को 15 कि.ग्रा./हे0 की दर से बुआई से पहले मिट्टी में मिला दें।

औसतन खर्च –रु. 16000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 14000 –37500/हे0

अक्टूबर के दूसरे सप्ताह से अप्रैल का अन्तिम सप्ताह
लहसुन

उन्नत प्रजाति :– जी 282, यमुना सफेद 3, जी–50 एवं जी 41

बीज दर :– 400–600 कि.ग्रा./हे0

बुआई की विधि :–

लाईन से लाईन से दूरी :– 20 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 10 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– 20–30 टन गोबर की खाद, नाइट्रोजन–150, फास्फोरस–60, पोटाश–80–100 एव् गधंक–40–60 कि.ग्रा./हे0

खरपतवार नियंत्रण :–

दो निराई खुरपी या हैण्ड हो से खरपतवार नियंत्रण के लिये काफी होती है।

सिंचाई :–

पहली सिचाई बोने के तुरन्त बाद करना चाहिए इसके बाद 10–15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए।

खुदाई :–

जब पत्तियां पीली या ब्राउन रंग की होने लगे तो लहसुन की खुदाई कर लेनी चाहिए।

औसतन खर्च –रु.42000/हे0 **शुद्व लाभ** –रु. 80000 –160000/हे0

मई के दूसरे सप्ताह से जून का अन्तिम सप्ताह
ढैंचा

उन्नत प्रजाति :– सेस पी0डी0सी0एस0आर0–1, सेस पन्त–1, सेस.एच–1, सेस एन0बी0पी0जी0आर0–1

बीज दर :– 80–100 कि.ग्रा./हे0

बुआई का तरीका :–

लाईन से लाईन की दूरी :– 30 सें.मी.

पौधे से पौधे की दूरी :– 15–20 सें.मी.

खाद एवं उर्वरक :– नाइट्रोजन–40, फास्फोरस–60 एव् पोटाश–40 कि.ग्रा./हे0

सिचाई :– 5–7

खरपतवार नियंत्रण :– एक बार निराई

औसतन खर्च –रु. 4500/हे0 **लाभ**– भूमि की दशा में सुधार एवं उर्वरकों की बचत

अवश्य करें :–

1. फसल को समय से बोयें।
2. बीजो को उपचारित करके बोये।
3. उन्नत किस्म का बीज बोये।
4. अन्य वैज्ञानिक तकनिकी अपनायें।
5. समिन्वित पोषण खरपतवार एव् कीट प्रवन्ध अपनाये।
6. समय पर फसल की कटाई करें तथा समय से ढैंचे की फसल को भूमि में मिलायें।

सम्भावित आर्थिक लाभ :– 256 से 541 रुपये प्रति दिन/हे0

कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना निदेशालय

(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)

मोदीपुरम, मेरठ–250 110 (यू.पी.), भारत

दूरभाष : 0121-288 8571, 295 6309; Fax : 0121-288 8546

ई–मेल : director@pdfsr.ernet.in, directorpdfsr@yahoo.com